संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

# आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती २००वीं जयन्ती 1824-2024

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

वर्ष : १२६ : संयुक्तांक ५१-५२ १६ व २६ दिसम्बर २०२४ (गुरुवार) पौष कृष्णपक्ष एकादशी सम्वत् २०८१ • दयानन्दाब्द २०० वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १६६०८५३१२५

### श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

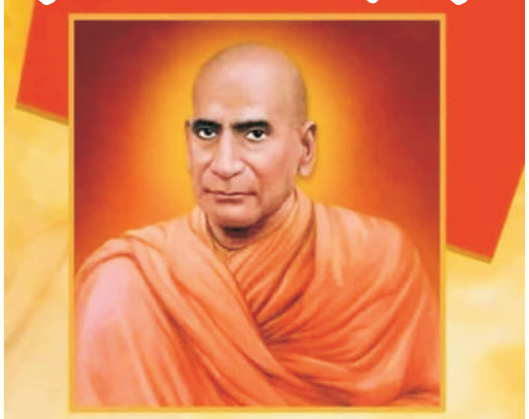

## "ओ३म् धर्माय स्वाहा, इदम् न मम्"

यज्ञ की आहुतियों में इदम् न मम् का उच्चारण मनुष्य में निराभिमानिता न आये इसलिये किया जाता है परन्तु जिसने अपना सर्वस्व धर्म के लिए अर्पण कर दिया हो, ऐसे धर्मवीर का नाम है श्रद्धानन्द। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तो अपनी श्रद्धा को ऋषिवर के चरणों में ही जाग्रत कर लिया था। राष्ट्र धर्म की वेदी पर एक एक करके सब धन सम्पत्ति यहाँ तक अपने प्राणों की भी धर्म के लिए सहर्ष अर्पण कर दिया। जब राष्ट्र रूपी वेदी पर बलिदानों की होड़ लगी हो तो श्रद्धानन्द पीछे कहाँ रहने वाले। वेदी को भी श्रद्धानन्द सा यजमान कभी-कभी ही मिलाता है।

यह श्रद्धा और आनन्दमय आहुति जो संसार के उपकार के लिए डाली गई थीं उससे ऐसी उपकारी व सुखदाई शक्ति प्रकट हुई कि जिसका लोहा विधर्मी भी मानते थे। जिन यवनों को राष्ट्रीय महा सभा (Indian National Congress) राष्ट्रीयता द्वारा न जीत सकी उसको उस धार्मिक नेता की आहुति ने जीता। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सन् १९१९ को दिल्ली की शाही मस्जिद का वह व्याख्यान। स्वामी श्रद्धानन्द ने सर्व प्रथम यवन वेदी (मिम्बर) से "त्वं हि न पिता वसो त्वं माता सतूव्रतो बभूविथ अथाते सुम्नयीमहे।।" के वेद मंत्र द्वारा ईश्वर का वर्णन किया और ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्ति के साथ अपना भाषण समाप्त किया। उसके बाद आज तक ऐसा कोई वीर नहीं हुआ जिसने ऐसा अद्भुत काम किया हो। सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द ही ऐसे वीर थे जिन्होंने कुरान की आयतों की जगह वेदपाठ और आमीन की जगह पर शान्ति के साथ यवन वेदी से सर्व प्रथम व्याख्यान दिया जो प्रथम और अन्तिम व्याख्यान था।




स्वामी जी की आत्मिक अग्नि जहाँ एक तरफ सुगन्धी से भरी थी वहीं दूसरी ओर उनमें समिधा की प्रचण्डता का वह स्वरूप भी विद्यमान था जिसके तेज से भारत की परतंत्रता में जकड़ने वाली जंजीरों के अंग्रेज शासकों की बन्दूकें भी शिथिल हो गईं। त्याग और तपस्या की उस प्रतिमूर्ति को काई छू नहीं सका। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण चाँदनी चौक का वह चौराहा था जहाँ अपना सीना संगीनों के आगे खोल दिया और संगीनें भी सिपाहियों सहित शर्म से झुक गईं।

अमृतसर में काँग्रेस के स्वागताध्यक्ष के पद से अपने ओजस्वी भाषण में स्वामी जी ने कहा था "यदि जाति को स्वतंत्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी सन्तान के सदाचार की बुनियाद रख दो। जब सदाचारी ब्रह्मचारी हो शिक्षक और कौमी हो शिक्षा पद्धति तभी कौम की जरूरतों को पूरा करने वाले नौजवान निकलेंगे, नहीं तो इसी तरह आपकी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनी रहेगी।"

आज स्वामी जी का कथन अक्षरशः सत्य साबित हो रहा है। काले अंग्रेज लगभग हर घर परिवार में मिल जायेंगे। अरे उनके बलिदान की भी लाज न रख पाये हम। राष्ट्रीय कांग्रेस, हिन्दू महासभा और शुद्धि सभा से निराश होने के बाद स्वामी जी ने आर्य समाज को लक्ष्य करते हुए लिखा है कि- "हिन्दू संगठन के लिए गत ढाई वर्ष काम करते हुए मैने अनुभव किया कि यदि आर्य संस्कृति की रक्षा और उसके द्वारा हिन्दू समाज को अधः पतन से बचाना है, तो आर्य समाज को अपनी त्रुटियाँ दूर करके इस सेवा के लिए दृढ़



–देवेन्द्रपाल वर्मा

प्रतिज्ञा करनी होगी। जब तक बिखरी हुई शक्तियों को केन्द्रित करके आर्य समाज की संस्था लगन से इस काम में नहीं लग जाती, तब तक हिन्दू समाज के अन्य सम्प्रदायों में भी जान नहीं पड़ सकती।"

आज वेद विमुख होने के कारण ही सारे संसार पर राज्य करने वाली आर्य जाति सिमट कर भारत में रह गयी है। यहाँ भी पाखंड व रूढ़ि चरम पर पहुंच रहा है। पड़ोसी देशों की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। बार-बार कोई श्रद्धानन्द या दयानन्द हम अभागों को बचाने नहीं आयेंगे। अब हमें ही श्रद्धानन्द बनने की शपथ लेनी होगी। तभी राष्ट्र व समाज बचेगा, वर्ना आने वाला कल कभी क्षमा नहीं करेगा।

## वेदामृतम्

**पात्यग्निर्विपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य।**
**पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः।।**

साम.६१४

परमेश्वर 'अग्नि' है, अग्रणी है, सबके कार्यों में अग्रणी होकर मार्गदर्शन करने- वाला है। देखो, यह पवन-रूप पक्षी अपने पंखों को फैलाए हुए आकाश में उड़ रहा है। कभी मृदुल उड़ान लेता है, कभी तीव्र झंझावात बन जाता है। कौन है, जो इसका सखा बनकर साथ-साथ चलता हुआ इसके संचार की रक्षा करता है? वह अग्नि प्रभु ही है। वह मेघावी है। उसी की मेधा से प्रेरणा लेकर यह जब-जब जैसी-जैसी उड़ान करनी उपयुक्त होती है तब-तब वैसी-वैसी उड़ान भरता है। देखो, यह सूर्य प्राची के प्रांगण में उदित हो अपना चरणन्यास करता हुआ शनैः शनैः ऊपर की ओर बढ़ रहा है। फिर मध्याकाश में पहुँचकर यह प्रतीची की ओर नीचे अवतरण कर रहा है। अस्ताचल पर पहुँच यह इस गोलार्ध में अन्धकार करके दूसरे गोलार्ध को प्रकाशित करने के लिए प्रयाण कर गया है। कौन है, जो निराश्रय आकाश में आश्रय बनकर इसकी रक्षा करता है? वह महान् 'अग्नि' प्रभु ही है। देखो, शरीर के केन्द्र हृदय-प्रदेश में बैठा हुआ जीवात्मा, पांच ज्ञानेन्द्रिय और मन तथा बुद्धि इन सप्तशीर्षण्य प्राणों से ज्ञान की ज्योति जगा रहा है। कौन है, जो इसे पथ-प्रदर्शन और रक्षण प्रदान करता है? वह अग्नि प्रभु ही है। और देखो, समाज के ये देवतुल्य विद्वान् जन यज्ञों का आयोजन कर रहे हैं, स्वार्थ को त्यागकर लोकहित के महान् कार्यों का अनुष्ठान कर रहे हैं। इनके यज्ञ 'उपमाद' हैं। ऐसे हैं जिनमें सम्मिलित होकर सब आनन्द और तृप्ति का लाभ करते हैं। कौन है जो इन देव-पुरुषों को यज्ञ-कार्यों में प्रेरित करता है और निरन्तर इनके यज्ञों की रक्षा में जुटा रहता है ? वह महान्, सर्वद्रष्टा, दर्शनीय 'अग्नि' ही है।

पवन-पक्षी को विहार करानेवाले, सूर्य को चरणन्यास करानेवाले, शरीरस्थ जीवात्मा को ज्ञान-कर्म में व्याप्त करनेवाले और देवपुरुषों के यज्ञ की रक्षा करनेवाले उस अग्नि प्रभु को हमारा नमस्कार है।

साभार-वेदमंजरी

## रामप्रसाद बिस्मिल जी के जीवन के कुछ संस्मरण।

### (१९ दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष)

–सचिन आर्य

**नशा छोड़ राष्ट्र भक्त कैसे बनें–**

पं० रामप्रसाद बिस्मिल जी का जन्म उत्तरप्रदेश में स्थित शाहजहांपुर में ११ जून १८९७ ई. को हुआ था। इनके पिता का नाम मुरलीधर तथा माता का नाम मूलमती था। इनके घर की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी। बालकपन से ही इन्हें गाय पालने का बड़ा शौक था। बाल्यकाल में बड़े उद्दंड थे। पांचवी में दो बार अनुत्तीर्ण हुए। थोड़े दिनों बाद घर से चोरी भी करने लगे तथा उन पैसों से गंदे उपन्यास खरीदकर पढ़ा करते थे, भंग भी पीने लगे। रोजाना ४०-५० सिगरेट पीते थे। एक दिन भांग पीकर संदूक से पैसे निकाल रहे थे, नशे में होने के कारण संदूकची खटक गई। माता जी ने पकड़ लिया व चाबी पकड़ी गई। बहुत से रूपये व उपन्यास इनकी संदूक से निकले। किताबों से निकले उपन्यासादि उसी समय फाड़ डाले गए व बहुत दण्ड मिला। (परमात्मा की कृपा से मेरी चोरी पकड़ ली गई, नहीं तो दो-चार साल में न दीन का रहता न दुनिया का -आत्मचरित्र)

परंतु विधि की लीला और ही थी। एक दिन शाहजहांपुर में आर्यसमाज के एक बड़े सन्यासी स्वामी सोमदेव जी आए। बिस्मिल जी का उनके पास आना-जाना होने लगा। इनके जीवन ने पलटा खाया, बिस्मिल जी आर्यसमाजी बन गए और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी भाई परमानन्द जी की लिखी पुस्तक तवारीखे हिन्द को पढ़कर बिस्मिल जी बहुत प्रभावित हुए। पं० रामप्रसाद ने

क्रमशः.......४ पर

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

# सम्पादकीय.....

## श्रद्धा की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द

(२३ दिसम्बर १९२६ बलिदान दिवस पर विशेष)

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती भारत के शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा आर्यसमाज के संन्यासी थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रसार किया। वे भारत के उन महान राष्ट्रभक्त संन्यासियों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपना जीवन स्वाधीनता, स्वराज्य, शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था।

**स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म–**

२ फरवरी सन् १८५६ (फाल्गुन कृष्ण त्रोदशी, विक्रम संवत् १९१३) को पंजाब प्रान्त के जालन्धर जिले के तलवान ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता, लाला नानक चन्द, ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासित यूनाइटेड प्रोविन्स (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में पुलिस अधिकारी थे। उनके बचपन का नाम वृहस्पति और मुंशीराम था, किन्तु मुन्शीराम सरल होने के कारण अधिक प्रचलित हुआ।

पिता का स्थानान्तरण अलग-अलग स्थानों पर होने के कारण उनकी आरम्भिक शिक्षा अच्छी प्रकार नहीं हो सकी। लाहौर और जालंधर उनके मुख्य कार्यस्थल रहे। एक बार आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक-धर्म के प्रचारार्थ बरेली पहुंचे। पुलिस अधिकारी नानकचन्द अपने पुत्र मुंशीराम को साथ लेकर स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनने पहुँचे। युवावस्था तक मुंशीराम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम को दृढ़ ईश्वर विश्वासी तथा वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया। वे एक सफल वकील बने तथा काफी नाम और प्रसिद्धि प्राप्त की। आर्य समाज में वे बहुत ही सक्रिय रहते थे।

उनका विवाह श्रीमती शिवा देवी के साथ हुआ था। जब आप ३५ वर्ष के थे तभी शिवा देवी स्वर्ग सिधारीं। उस समय उनके दो पुत्र और दो पुत्रियां थीं। सन् १९१७ में उन्होने सन्यास धारण कर लिया और स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए।

मुंशीराम की बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था अपने पिता के साथ व्यतीत होती रही। इन्होने बनारस के क्वींस कालेज, जय नारायण कालेज और प्रयाग के म्यो कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। वंश परम्परा के अनुसार इनके धर्म-कर्म एवं भक्ति का विशेष प्रभाव था। विश्वनाथ जी के दर्शन किये बिना ये जलपान तक नही करते थे। बांदा में ये नियमित रामचरितमानस का पाठ सुनते थे और प्रत्येक आदित्यवार को एक पैर पर खड़े होकर सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ करते थे। बचपन की एक घटना ने उनके अंदर अस्पृश्यता को लेकर घृणा पैदा कर दी।

पहले वे भी १९वीं सदी के तमाम प्रतिभाशाली नवयुवकों की तरह नास्तिकवादी थे। उनके जैसा साहस, धैर्य और ईमानदारी उस समय के किसी भी लोक नायक में नहीं मिलती। उन्होंने अपनी जो जीवनी लिखी है, उसमें सच को जिस तरह और जिस बेरहमी से दिखाया है, वह दुर्लभ है। पहले मैं भी गांधी जी की जीवनी- "सत्य के मेरे प्रयोग" को सबसे ईमानदार आत्म कथा समझता था। पर गांधी जी कई बार उन्हीं घटनाओं का सच्चाई के साथ वर्णन करते प्रतीत होते हैं, जो उनकी राजनीतिक विचारधारा को पुष्ट करें। धर्म, समाज और अंध विश्वास तथा व्याभिचार पर वे चलताऊ रवैया अपनाते हैं। जबकि स्वामी श्रद्धानंद कड़ा प्रहार करते हैं।

उनके पिता १८५७ के गदर के समय संयुक्त प्रांत के किसी शहर, संभवतः बनारस में ईस्ट इंडिया सरकार के कोतवाल थे और वे उनकी निर्ममता के बारे में विस्तार से लिखते हैं। उन्होंने लिखा है, कि बनारस के जिस लाहौरी मोहल्ले में उनका घर था, वहां एक दिन अनजाने में उन्होंने किसी भंगिन को छू लिया। पड़ोसी हिंदुस्तानी खत्रियों ने हंगामा कर दिया। पंजाब की होने के कारण उनकी मां छुआ-छूत का यूपी वालों जैसी कड़ाई से पालन नहीं करती थीं। लेकिन जन दबाव के चलते भयंकर ठंड में उन्हें बालक मुंशीराम को स्नान करवाना पड़ा। इससे उनके अंदर अस्पृश्यता को लेकर घृणा पैदा हुई। इसी तरह आगे वे लिखते हैं, कि एक दिन सुबह-सुबह वे गंगा नहाने के लिए कांधे पर धोती डाले जा रहे थे। रास्ते में एक मठ से उन्होंने एक स्त्री की चीख सुनी। दौड़ कर वे वहां गए, तो स्वयं महंत को पापकर्म में लिप्त देखा। उन्होंने उस महंत को गर्दन से धर-दबोचा। पहले तो महंत के चेले आए, पर यह पता चलने पर कि इस किशोर के पिता शहर कोतवाल हैं, वे भाग निकले।

एक पादरी को ईश प्रचार करते समय इसी तरह के कुछ असामाजिक कार्यों में धुत देख, उन्हें ईश्वर और उनके इन कथित पुरोहितों से नफरत हो गई। बाद में उनके पिता का तबादला बरेली हो गया। वहां उन्होंने एक दिन स्वामी दयानंद को प्रवचन करते सुना और उन्हें लगा, कि इस व्यक्ति में कुछ दम है। और वे स्वामी जी के तर्कों को सुन कर उनके अनुगामी बन गए।

एक दिन उनके किशोर हृदय को ऐसी ठेस लगी कि इनकी समस्त रुढ़िवादी धार्मिक कट्टरता तिरोहित हो गयी। हुआ यह कि काशी के विश्वनाथ के दर्शनार्थ गये तो उन्हें बाहर ही रोक दिया गया क्योंकि मन्दिर में रींवा की महारानी दर्शन कर रही थी। इस प्रकार मूर्तिपूजा से इनको विरक्ति हो गयी। ऐसी ही अनेक घटनाओं के कारण मुंशी राम के मन में उथल पुथल मच गयी। संवत १९३६ वि. में स्वामी दयानन्द सरस्वती का बरेली आगमन हुआ। पिता को तो शान्ति व्यवस्था के नाते स्वामी जी के व्याख्यान सुनने थे। उन्होंने इनके न चाहने पर ही आग्रह पूर्व मुंशी राम को स्वामी के सत्संग में सम्मीलित होने की प्रेरणा दी।

आदित्यमूर्ति दयानन्द के महान व्यक्तित्व के दर्शन कर तथा सभा में पादरी स्काट एवं अन्य यूरोपियनो को बैठा देखकर इनके मन में श्रुधा का उत्स प्रस्फुटित हो उठा। इन्होने तीन अवसरों पर स्वामी जी के समक्ष ईश्वर के अस्तित्व पर शंका प्रकट की।

**स्वामी जी का राजनैतिक व सामाजिक जीवन–**

उनका राजनैतिक जीवन रोलेट एक्ट का विरोध करते हुए एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में प्रारम्भ हुआ। अच्छी-खासी वकालत की कमाई छोड़कर स्वामीजी ने "दैनिक विजय" नामक समाचार-पत्र में "छाती पर पिस्तौल" नामक क्रान्तिकारी लेख लिखे। स्वामीजी महात्मा गांधी के सत्याग्रह से प्रभावित थे। जालियांवाला बाग हत्याकाण्ड तथा रोलेट एक्ट का विरोध वे हिंसा से करने में कोई बुराई नहीं समझते थे ।

इतने निर्भीक कि जनसभा करते समय अंग्रेजी फौज व अधिकारियों को वे ऐसा साहसपूर्ण जवाब देते थे कि अंग्रेज भी उनसे डरा करते थे। सन् १९२२ में गुरु का बाग सत्याग्रह के समय अमृतसर में एक प्रभावशाली भाषण दिया। हिन्दू महासभा उनके विचारों को सुनकर उन्हें प्रभावशाली पद देना चाहती थी, किन्तु उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया।

स्वामीजी ने १३ अप्रैल १९१७ को संन्यास ग्रहण किया, तो वे स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। आर्यसमाज के सिद्धान्तों का समर्थक होने के कारण उन्होंने इसका बड़ी तेजी से प्रचार-प्रसार किया। वे नरम दल के समर्थक होते हुए भी ब्रिटिश उदारता के समर्थक नहीं थे। आर्यसमाजी होने के कारण उन्होंने हरिद्वार में गंगा किनारे गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर वैदिक शिक्षा प्रणाली को महत्व दिया।

**स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय–**

स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितों की भलाई के कार्य को निडर होकर आगे बढ़ाया, साथ ही कांग्रेस के स्वाधीनता आंदोलन का बढ़-चढ़कर नेतृत्व भी किया। कांग्रेस में उन्होंने १९१९ से लेकर १९२२ तक सक्रिय रूप से महत्त्वपूर्ण भागीदारी की। १९२२ में अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया, लेकिन उनकी गिरफ्तारी कांग्रेस के नेता होने की वजह से नहीं हुई थी, बल्कि वे सिक्खों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह करते हुए बंदी बनाये गए थे। स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस से अलग होने के बाद भी स्वतंत्रता के लिए कार्य लगातार करते रहे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए स्वामी जी ने जितने कार्य किए, उस वक्त शायद ही किसी ने अपनी जान जोखिम में डालकर किए हों। वे ऐसे महान् युगचेता महापुरुष थे, जिन्होंने समाज के हर वर्ग में जनचेतना जगाने का कार्य किया।

**शुद्धि आन्दोलन–**

गैर-हिन्दुओं को पुनः अपने मूल धर्म में लाने के लिये आन्दोलन 'शुद्धि' चलाया स्वामी श्रद्धानन्द के कांग्रेस के साथ मतभेद तब हुए जब उन्होंने कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं को मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर चलते देखा। कट्टरपंथी मुस्लिम तथा ईसाई हिन्दुओं का मतान्तरण कराने में लगे हुए थे। स्वामी जी ने असंख्य व्यक्तियों को आर्य समाज के माध्यम से पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कराया। उन्होंने गैर-हिन्दुओं को पुनः अपने मूल धर्म में लाने के लिये आन्दोलन चलाया, जिसका नाम शुद्धि था। स्वामी श्रद्धानन्द पक्के आर्यसमाजी थे, किन्तु सनातन धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान पंडित मदनमोहन मालवीय और पुरी की गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ को गुरुकुल में आमंत्रित कर छात्रों के बीच उनका प्रवचन कराया था।

**बलिदान–**

श्रद्धानन्द जी सत्य के पालन पर बहुत जोर देते थे। उन्होंने लिखा है- ''प्यारे भाइयो! आओ, दोनों समय नित्य प्रति संध्या करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करें और उसकी सत्ता से इस योग्य बनने का यत्न करें कि हमारे मन, वाणी और कर्म सब सत्य ही हों। सर्वदा सत्य का चिंतन करें। वाणी द्वारा सत्य ही प्रकाशित करें और आचरण में भी सत्य का ही पालन करें। २३ दिसम्बर १९२६ को नया बाजार स्थित उनके निवास स्थान पर अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी व्यक्ति ने धर्म-चर्चा के बहाने उनके कक्ष में प्रवेश करके उनकी गोली मार कर हत्या दी थी।

इस तरह धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितों का उत्थान करने वाला यह युगधर्मी महापुरुष सदा के लिए अमर हो गया।

-सम्पादक

---

गतांक से आगे.....

# सत्यार्थ प्रकाश

## अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

## अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

१२९-और अटकी रहो बीच घरों अपने के, आज्ञा पालन करो अल्लाह और रसूल की, सिवाय इसके नहीं बस जब अदा कर ली जैद ने हाजित उस से, ब्याह दिया हम ने तुझ से उस को ताकि न होवे ऊपर ईमान वालों के तंगी बीच बीबियों से ले पालकों उन के के, जब अदा कर लें उन से हाजित और है आज्ञा खुदा की की गई। नहीं है ऊपर नबी के कुछ तंगी बीच उस वस्तु के नहीं है मुहम्मद बाप किसी मर्द का और हलाल की स्त्री ईमानवाली जो देवे बिना महर के जान अपनी वास्ते नबी के ढील देवे तू जिस को चाहे उन में से और जगह देवे तर्फ अपनी जिस को चाहे, नहीं पाप ऊपर तेरे ऐ लोगो ! जो ईमान लाये हो मत प्रवेश करो घरों में पैगम्बर के।।

मं० ५। सि० २२। सू० ३३। आ० ३३ । ३६ । ३७ । ४०/५०/५१।५२

(समीक्षक) यह बड़े अन्याय की बात है कि स्त्री घर में कैद के समान रहे और पुरुष खुल्ले रहें। क्या स्त्रियों का चित्त शुद्ध वायु, शुद्ध देश में भ्रमण करना. सृष्टि के अनेक पदार्थ देखना नहीं चाहता होगा? इसी अपराध से मुसलमानों के लड़के विशेषकर सयलानी और विषयी होते हैं। अल्लाह और रसूल की एक अविरुद्ध आज्ञा है वा भिन्न-भिन्न विरुद्ध ? यदि एक है तो दोनों की आज्ञा पालन करो कहना व्यर्थ है और जो भिन्न-भिन्न विरुद्ध है तो एक सच्ची और दूसरी झूटी ? एक खुदा दूसरा शैतान हो जायगा ? और शरीक भी होगा? वाह कुरान का खुदा और पैगम्बर तथा कुरान को! जिस को दूसरे का मतलब नष्ट कर अपना मतलब सिद्ध करना इष्ट हो ऐसी लीला अवश्य रचता है। इस से यह भी सिद्ध हुआ कि मुहम्मद साहेब बड़े विषयी थे। यदि न होते तो (लेपालक) बेटे की स्त्री को जो पुत्र की स्त्री थी, अपनी स्त्री क्यों कर लेते ? और फिर ऐसी बातें करने वाले का खुदा भी पक्षपाती बना और अन्याय को न्याय ठहराया। मनुष्यों में जो जङ्गली भी होगा वह भी बेटे की स्त्री को छोड़ता है और यह कितनी बड़ी अन्याय की बात है कि नबी को विषयासक्ति की लीला करने में कुछ भी अटकाव नहीं होना। यदि नबी किसी का बाप न था तो जैद (लेपालक) बेटा किस का था? और क्यों लिखा ? यह उसी मतलब की बात है कि जिस से बेटे की स्त्री को भी घर में डालने से पैगम्बर साहेब न बचे, अन्य से क्योंकर बचे होंगे? ऐसी चतुराई से भी बुरी बात में निन्दा होना कभी नहीं छूट सकता। क्या जो कोई पराई स्त्री भी नबी से प्रसन्न होकर निकाह करना चाहे तो भी हलाल है? और यह महा अधर्म की बात है कि नबी तो जिस स्त्री को चाहे छोड़ देवे और मुहम्मद साहेब की स्त्री लोग यदि पैगम्बर अपराधी भी हो तो कभी न छोड़ सकें! जैसे पैगम्बर के घरों में अन्य कोई व्यभिचार दृष्टि से प्रवेश न करें तो वैसे पैगम्बर साहेब भी किसी के घर में प्रवेश न करें। क्या नबी जिस किसी के घर में चाहें निशङ्क प्रवेश करें और माननीय भी रहें? भला ! कौन ऐसा हृदय का अन्धा है कि जो इस कुरान को ईश्वरकृत और मुहम्मद साहेब को पैगम्बर और कुरानोक्त ईश्वर को परमेश्वर मान सके। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसे युक्तिशून्य धर्मविरुद्ध बातों से युक्त इस मत को अर्ब देशनिवासी आदि मनुष्यों ने मान लिया ! १२९।

१३०-नहीं योग्य वास्ते तुम्हारे यह कि दुःख दो रसूल को, यह कि निकाह करो बीबियों उस की को पीछे उस के कभी. निश्चय यह है समीप अल्लाह के बड़ा पाप निश्चय जो लोग कि दुःख देते हैं अल्लाह को और रसूल उस के को. लानत की है उन को अल्लाह ने और वे लोग कि दुःख देते हैं मुसलमानों को और मुसलमान औरतों को विना इस के, बुरा किया है उन्होंने बस निश्चय उठाया उन्होंने बोहतान अर्थात् झूठ और प्रत्यक्ष पाप लानत मारे, जहाँ पाये जावें पकड़े जावें कतल किये जावें खूब मारा जाना ऐ रब हमारे, दे उन को द्विगुणा अजाब से और लानत से बड़ी लानत कर। - मं० ५। सि० २२। सू० ३३। आ० ५३।५४।५५।६१।६८।

(समीक्षक) वाह ! क्या खुदा अपनी खुदाई को धर्म के साथ दिखला रहा है? जैसे रसूल को दुःख देने का का निषेध करना तो ठीक है परन्तु दूसरे को दुःख देने में रसूल को भी रोकना योग्य था सो क्यों न रोका ? क्या किसी के दुःख देने से अल्लाह भी दुःखी हो जाता है? यदि ऐसा है तो वह ईश्वर ही नहीं हो सकता।

क्या अल्लाह और रसूल को दुःख देने का निषेध करने से यह नहीं सिद्ध होता कि अल्लाह और रसूल जिस को चाहें दुःख देवें? अन्य सब को दुःख देना चाहिये ? जैसे मुसलमानों और मुसलमानों की स्त्रियों को दुःख देना बुरा है तो इन से अन्य मनुष्यो को दुःख देना भी अवश्य बुरा है। जो ऐसा न माने तो उस की यह बात भी पक्षपात की है। वाह गदर मचाने वाले खुदा और नबी। जैसे ये निर्दयी संसार में हैं वैसे और बहुत थोड़े होंगे। जैसा यह कि अन्य लोग जहाँ पाये जावें, मारे जावें पकड़े जावें, लिखा है वैसी ही मुसलमानों पर कोई आज्ञा देवे तो मुसलमानों को यह बात बुरी लगेगी वा नहीं? वाह क्या हिंसक पैगम्बर आदि हैं कि जो परमेश्वर से प्रार्थना करके अपने से दूसरों को दुगुण दुःख देने के लिये प्रार्थना करना लिखा है। यह भी पक्षपात मतलबसिन्धुपन और महा अधर्म की बात है। इसी से अब तक भी मुसलमान लोगों में से बहुत से शठ लोग ऐसा ही कर्म करने में नहीं डरते। यह ठीक है है कि सुशिक्षा के विना मनुष्य पशु के समान रहता है।।१३०।।

क्रमशः अगले अंक में.....

# बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी–स्वामी श्रद्धानन्द

–डॉ0 धर्मपाल आर्य

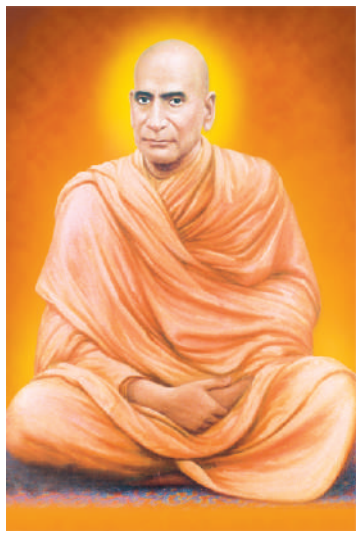

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पंजाब के तलवन नामक गाँव में २३ फरवरी १८५७ को हुआ था। उनका पहला नाम बृहस्पति था, परन्तु बाद में उन्हें मुंशीराम कहा जाने लगा। १९१७ में संन्यास के बाद उनका नाम स्वामी श्रद्धानन्द हुआ। उनके पिता नानकचन्द थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा बनारस और लाहौर में हुई। उनका विवाह श्रीमती शिवदेवी से हुआ जो ३५ वर्ष की अवस्था में अपने दो पुत्रों तथा दो पुत्रियों को छोड़कर चल बसी। मुंशीराम नायब तहसीलदार बने। उन्होंने इस नौकरी को छोड़कर फिल्लौर में और बाद में जालंधर में वकालत शुरू कर दी। यहां भी उनका मन नहीं लगा और वे स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज के क्षेत्र में प्रवृत्त हुए। उन्होंने ४ मार्च १९०२ को वैदिक ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप, राष्ट्र के लिए समर्पित नवयुवक तैयार करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका से लौटकर महात्मा गांधी गुरुकुल कांगड़ी में आए। महात्मा मुंशीराम से उनका मेलजोल बढ़ा और वे भी देश को स्वाधीन कराने की राह पर चल पड़े। मोहनदास कर्मचन्द गांधी को उन्होंने महात्मा की उपाधि से विभूषित किया। १९१७ में वे संन्यासी हो गए। वे दिल्ली आकर रहने लगे, यहां उन्होंने दलितों और अनाथों के लिए संस्थाएँ बनायी। यहां से उर्दू में 'तेज' और हिन्दी में 'अर्जुन' नामक समाचार पत्र निकाला। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हड़तालों तथा धरना-प्रदर्शनों का आयोजन किया। रौलट एक्ट का विरोध किया। सैनिकों की संगीनों का छाती तानकर सामना किया। जामा मस्जिद से व्याख्यान देने वाले वे पहले और आखिरी हिन्दू थे। वे हिन्दुओं तथा मुसलमानों सभी के रहनुमा थे। उनका जीवन त्याग और तपस्या से परिपूर्ण था। उन्होंने २३ दिसम्बर १९२६ को अन्तिम साँस ली। भारत सरकार ने उनकी स्मृति में ३० मार्च १९७० को एक डाक टिकट जारी किया था। शताब्दी वर्ष २००२ में भारत सरकार ने गुरुकुल कांगड़ी पर भी डाक टिकट जारी किया।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रयास से जलियांवाला बाग काण्ड के बाद अमृतसर में कांग्रेस का महाअधिवेशन हुआ था। उसमें कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता उपस्थित थे। पं. मोतीलाल नेहरू और महामना मदनमोहन मालवीय उस समय कांग्रेस के अग्रणी कार्यकर्तृता थे। स्वामी श्रद्धानन्द उस समारोह के स्वागताध्यक्ष थे। स्वामी जी ने उस समय देशवासियों को चार परामर्श दिए थे-

१. केवल इतनी आवश्यकता है कि आर्य लोग अपने आचरण को उत्तम बनाकर दीपक बनें ताकि उनसे दूसरे दीपक जलाए जा सकें।

२. सभी प्रान्तों में मैंने देखा है कि हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे पर संदेह करने लगे हैं, किन्तु मुसलमान और सिख तो सामाजिक दृष्टि से संगठित हैं. किन्तु हिन्दू सामाजिक दृष्टि से बिखरे हुए हैं। मेरी सम्मति में इसका उपाय एक ही है कि हिन्दू नेता हिन्दू समाज को सामाजिक दृष्टि से संगठित करें और मुसलमान नेता खिलाफत की अपेक्षा स्वराज की प्राप्ति पर अधिक ध्यान दें।

३. यदि देश और जाति को देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी सन्तान में सदाचार की बुनियाद रखें। जब सदाचारी ब्रह्मचारी शिक्षक हों और कौमी हो शिक्षा पद्धति, तब ही कौम की जरूरत पूरी करने वाले नौजवान निकलेंगे, अन्यथा अपनी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनकर रहेगी।

४. ईसाई मुक्ति फौज भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्नशील है, क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश सरकार के जहाज के लिए लंगर के समान हैं। आज से ये साढ़े छः करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे, बल्कि हमारे भाई-बहन हैं, हमारे पुत्र-पुत्रियाँ हैं-उन्हें मातृभूमि के प्रेम जल से शुद्ध करो, उन्हें पाठशालाओं में पढ़ाओं। उनके गृहस्थ नर-नारियों को अपने सामाजिक व्यवहार में सम्मिलित करो।"

स्वामी जी महाराज ने ये चार परामर्श दिए थे। ये भारतीयता की रक्षा के इतिहास में, भारतीय गौरव की पुनः स्थापना के इतिहास में तथा वैदिक धर्म के प्रसार के इतिहास में, प्रकाश स्तम्भ के समान हैं, पहली बात में उन्होंने सम्पूर्ण आर्यजाति का आहान किया है कि वे दीपक के समान तेजस्वी हों। वे दीपक के समान मार्गदर्शक हों। वे दीपक के समान अपने आप को तिल-तिल करके होम कर देने वाले हों। निश्चय ही उनका अपना जीवन दीपक था। उन्होंने दूसरों को मार्ग दिखाया उन्होंने अपने आपको दीपक के समान जला दिया। उन्होंने देश और जाति की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर दिया। उन्होंने तो सर्वमेध यज्ञ किया था। वे प्रारम्भिक जीवन में क्या थे, सभी जानते हैं, पर आगे चलकर उन्होंने अपने आपको कितना आचारवान् बनाया, यह किसी से भी छिपा नहीं है। वे सार्वजनिक जीवन के व्यक्ति थे। सार्वजनिक व्यक्ति का कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं होता। उसका तो एक-एक क्षण सबके सामने होता है। उसका कोई भी कार्य अपने लिए नहीं होता। उसके सभी कार्य दूसरों के लिए होते हैं। उसका जीवन स्वच्छ, दर्पण के समान आभासमान होता है। संस्थाओं के सर्वोच्च अधिकारियों को उनके जीवन से शिक्षाग्रहण करनी चाहिए। उन्हें सदाचारी बनना चाहिए। उन्हें प्रकाशस्तम्भ बनना चाहिए।

स्वामी जी महाराज ने हिन्दू जाति के संगठन की बात कहीं है। यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। यदि हमें कुछ पाना है, अपने राष्ट्र का उद्धार करना है, अपनी जाति को प्रगति के संगठित होना ही होगा। संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्। यह नाद गुंजाना ही होगा। इसे क्रियान्वित करना ही होगा। आज मेरे अनेक भाई छोटे-छोटे विवादों में फंसे हैं। वे उस बृहद् उद्देश्य को भूल चुके हैं जो ऋषि ने हमें बताया था. जिस मार्ग पर स्वामी श्रद्धानन्द चले थे।

संगठनात्मक दृष्टि से आज भी सुदृढ़ता की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द एक शहीद की मौत मरे। हर किसी की कामना हो सकती है कि वह शहीद की मौत मरे, पर शहीद वही होता है जो किसी उद्देश्य के लिए अपने को न्योछावर करे। स्वामी श्रद्धानन्द ने उसी संगठनात्मक सुदृढ़ता और एकता के लिए अपने जीवन का बलिदान किया। वह तो वीर पुरुष थे। वे वीरता की ही मृत्यु को प्राप्त हुए। कायर लोग अपने जीवन में अनेक बार मरते हैं। वे जब भी डरेंगे, तभी मरेंगें, परन्तु बहादुर लोग अपने जीवन में केवल एक बार मृत्यु का वरण करते हैं। वे वीर बहादुर ही सदा याद किए जायेंगे, जो निर्भीक होंगे, अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होंगें। ऐ मेरे प्यारे आर्य भाइयो ! आप उठ जाओ, आगे बढ़ो, अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। अपने को देश और जाति पर बलिदान करने के लिए आगे आओ।

स्वामी जी ने अपनी संतान को सदाचारी बनाने की बात कहीं है। 'जनया दैव्यम् जनम्' यह वेद का आदेश है। स्वयं सदाचारी बनो, अपनी सन्तति को सदाचारी बनाओ। अपनी सन्तति को अपने से भी अच्छा बनाओ। पिता पुत्रात् पराजयेत् स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति के माध्यम में ऐसे ही वीरों के निर्माण की बातअपने मन में सोची थी। उनका सपना सच हुआ। गुरुकुल के सैकड़ों स्नातकों ने अपने-अपने क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। स्वामी श्रद्धानन्द अपने दोनों पुत्रों- हरिश्चन्द्र और इन्द्रचन्द्र को लेकर गंगा के किनारे बीहड़ जंगल में चले गये थे। वहीं पर उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति के अपने सपने को साकार किया। उन्होंने भारतीय इतिहास एवं दर्शन की उन्हें शिक्षा दी। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उन्हें शिक्षा दी। सदाचार की उन्हें शिक्षा दी। उन्हें अपने देश पर बलिदान होने की शिक्षा दी। उन्हें वीरत्व एवं निर्भीकता प्रदान की। गुरुकुल का विद्यार्थी 'भय' करना नहीं जानता। वह तो साक्षात् 'वीरता' है। स्वामी श्रद्धानन्द तो कर्मशूर भी थे। उन्होंने जो कहा वह करके दिखाया। वे केवल भाषण तक सीमित नहीं थे। आज के भाषणकर्ताओं का प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि उनकी कथनी और करनी में अन्तर होता है। असली प्रभाव उसी का पड़ता है जो जैसा कहता है वैसा ही करता भी है। सत्य का उपदेश करने वाले को सत्यवादी होना चाहिए। कर्म का उपदेश करने वाले को कर्मशील होना चाहिए। संयम का उपदेश करने वाले को संयमी होना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द में ये सभी गुण विद्यमान थे। आप अपनी सन्तान को सदाचारी बनाएं, उन्हें देश और जाति पर गर्व करने वाला बनाएं, उन्हें नित्य संध्या और अग्निहोत्र करने वाला बनाएं, उन्हें नित्य स्वाध्याय करने वाला बनाएं, तभी देश और जाति की रक्षा हो सकती है। आज के विषाक्त वातावरण में सदाचारी लोगों की आवश्यकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द का चौथा परामर्श वास्तव में एक चेतावनी है। धर्मान्तरण उस समय भी हो रहा था आज भी हो रहा है। देश के गरीब लोगों को ईसाई बनाया जा रहा था, आज भी बनाया जा रहा है। उन्हें आज मुसलमान भी बनाया जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय में एक टीस थी। इसीलिए उन्होंने दलितोद्धार सभा बनायी। इसीलिए उन्होंने शुद्धि समा बनाई। वे नहीं चाहते थे कि धर्मान्तरण हो। आर्य समाज ने धर्म रक्षा महाभियान चलाया। आर्य समाज ने समझाया कि वैदिक धर्म की सर्वश्रेष्ठ धर्म है। दलितोद्धार का मूल मंत्र है कि सभी को समानता का अधिकार दिया जाए। सभी जगह समता सम्मेलन आयोजित किए जाएं। जब सभी को समान सम्मान मिलेगा, ऊँच-नीच का भेद समाप्त हो जाएगा, जातीयता का भेद समाप्त हो जाएगा, सभी को समान अवसर मिलेंगे तो स्वतः ही धर्मान्तरण का चलन समाप्त हो जायेगा। इस कार्यक्रम को वास्तविक व्यवहार में लाने की आज भी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि स्वामी श्रद्धानन्द के समय थी।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाने की सार्थकता इसी बात में है कि भारतवासी उनके सच्चे अनुयायी बनें। अपनी सन्तान को आर्य बनायें, सभी को गले लगाएं, अपनी भाषा का प्रयोग करें, मद्यादि व्यसनों से दूर रहें तथा गोरक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार हों।

शालीमार बाग, दिल्ली
दूरभाष-०११-२७४७२०१४

# २१ दिसम्बर से उत्तरायण हुआ

-डॉ० रूपचन्द्र 'दीपक'

ज्योतिष में पारंगत बनना तो कठिन है, किन्तु जितना सबके लिए आवश्यक हो, उतना ज्ञान प्राप्त करना सरल है।

दिये गये चित्र के अनुसार पृथ्वी दीर्घवृत्ताकार घूमती हुई कखगघ मार्ग पर सूर्य का चक्कर लगाती है। इसे एक चक्कर लगाने में जितना समय लगता है, उसी को 'वर्ष' कहते हैं। पृथ्वी को अपनी कीली पर एक बार घूमने में लगा समय 'दिन' कहलाता है और इसमें २४ घण्टे होते हैं। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा का ३६० अंश घूमने में १२ महीने या ३६५ दिन या ३६५x२४ घण्टे लगाती है। इस प्रकार एक मास में ३० अंश कोण बनाती और एक सौर मास लगभग साढ़े ३० दिन का होता है। दो मासों के बीच का क्षण 'संक्रान्ति' है और वर्ष में समान अवधियों के अन्तराल पर १२ संक्रान्तियाँ होती हैं।

बिन्दु 'घ' पर दिन-रात बराबर होते हैंय अतः इसे 'विषुव' कहते हैं। यहाँ पृथ्वी और सूर्य के बीच अर्थात् पृथ्वी की विषुवत रेखा और परिक्रमा रेखा के बीच शून्य अंश का कोण बनता है। यह बिन्दु वसन्त ऋतु का सम्पात (मध्य बिन्दु) है। इससे पूर्व पूरा चैत्र मास बीत चुका और पूरा वैशाख शेष होता है। यह सौर नववर्ष की संक्रान्ति है। इस बिन्दु पर अंग्रेजी दिनांक २१ मार्च नियत किया गया है।

इसी प्रकार बिन्दु 'ख' पर दिन-रात बराबर होते हैं अतः यह दूसरा विषुव है। यहाँ पृथ्वी और सूर्य के बीच १८० अंश का कोण बनता है। यह बिन्दु शरद् ऋतु का सम्पात (मध्य बिन्दु) है। इससे पूर्व पूरा आश्विन मास बीत चुका और पूरा कार्तिक शेष रहता है। दोनों मासों के बीच का क्षण संक्रान्ति है। इस कोण पर अंग्रेजी दिनांक २३ सितम्बर नियत किया गया है।

बिन्दु 'क' पर ९० अंश का कोण बनता है। यहाँ दिन सबसे बड़ा होता है। पृथ्वी अपनी दिशा दक्षिण से उत्तर को बदलती है और सूर्य दक्षिण को जाता हुआ प्रतीत होता है। यही सूर्य का दक्षिणायन है। इस दिन अंग्रेजी दिनांक २१ जून नियत किया गया है। कोण ९० अंश बनते ही संक्रान्ति होती है और वर्षा ऋतु प्रारम्भ होती है। वर्षा ऋतु से तात्पर्य पानी बरसना नहीं है अपितु दो महीने की जो कालावधि है, उसी को ऋतु जानना चाहिए। इसी संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है।

इसी प्रकार बिन्दु 'ग' पर २७० अंश का कोण बनता है। यहाँ दिन सबसे छोटा होता है। पृथ्वी अपनी दिशा उत्तर से दक्षिण को बदलती है और सूर्य उत्तर को जाता हुआ प्रतीत होता है। यही सूर्य का उत्तरायण है। इस दिन अंग्रेजी दिनांक २२ दिसम्बर नियत किया गया है। कोण २७० अंश बनते ही संक्रान्ति होती है और शिशिर ऋतु प्रारम्भ होती है। इसी संक्रान्ति से उत्तरायण प्रारम्भ होता है।

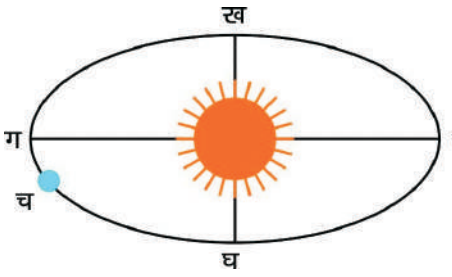


वर्ष २०२४ में फरवरी २९ दिन की हुई। अतः आकाश में १ मार्च को घटने वाली कुछ घटनाएँ २९ फरवरी को घट गयीं और २२ दिसम्बर को बनने वाला २७० अंश का कोण २१ दिसम्बर को १४:५४ बजे बन गया। यही मकर संक्रान्ति थी, जिसके बाद सूर्य उत्तरायण में आ चुका है। आज के कुछ विद्वान् कहते हैं कि आजकल २२ दिसम्बर को होने वाली संक्रान्ति, जो इस वर्ष २१ दिसम्बर को हुई, यह 'मकर संक्रान्ति' नहीं, कोई अन्य नामवाली संक्रान्ति होती है। चाहे जो नाम रखिए, यही संक्रान्ति उत्तरायण का पर्व है।

भारत महान् के अधिकांश विद्वान् १४ जनवरी को 'उत्तरायण वाली संक्रान्ति' मानते हैं, जो कि गणित की दृष्टि से गलत है। प्रथमतः, किसी १४ दिनांक को कभी कोई संक्रांति नहीं हो सकती। बारह संक्रान्तियों में से चार संक्रान्तियाँ हैं (१) उत्तरायण के दिवस-रात्रि बराबर होने तथा कोण शून्य या ३६० होने का दिनांक २१ मार्च (२) दीर्घतम दिवस होने तथा कोण ९० होने का दिनांक २१ जून (३) दक्षिणायन के दिवस-रात्रि बराबर होने तथा कोण १८० होने का दिनांक २३ सितम्बर (४) लघुत्तम दिवस होने तथा कोण २७० होने का दिनांक २२ दिसम्बर।

निरन्तर की किन्हीं दो संक्रान्तियों के बीच ३० अंश कोण का अन्तर और समयान्तर साढ़े तीस दिन होगा। परिक्रमा-पथ पूर्ण गोल न होने के कारण प्रतिमास कुछ घण्टों का अन्तर भी आएगा। इस प्रकार समस्त संक्रान्तियों की तिथियाँ २०-२१-२२-२३ ही होंगी। किसी परिस्थिति में कुछ मिनटों के अन्तर के कारण एक दिनांक का अन्तर सम्भव है। इन तिथियों के अतिरिक्त किसी दिनांक को कोई संक्रान्ति नहीं हो सकती। जिस गणित से ये तिथियाँ २१ मार्च, २१ जून तथा २३ सितम्बर पायी जाती हैं, उस गणित से उत्तरायण की संक्रान्ति अनिवार्य रूप से २०-२१-२२-२३ दिसम्बर होगी। यह कभी १४ जनवरी नहीं हो सकती।

द्वितीयतः, उत्तरायण वाली संक्रान्ति लघुत्तम दिवस वाली संक्रान्ति ही है। पृथ्वी कखग मार्ग पर दक्षिण-पूर्व-उत्तर जाकर 'ग' पर २७० अंश का कोण एवं लघुत्तम दिवस बनाकर दिशा बदलती हुई गघक मार्ग पर उत्तर-पश्चिम-दक्षिण चलती है। इस प्रकार २७० अंश का कोण, लघुत्तम दिवस एवं दिशा-परिवर्तन एक ही बिन्दु 'ग' पर होते हैं। यही सूर्य का उत्तरायण होना कहलाता है। यह बिन्दु 'ग' पर ही होता एवं हो सकता है, बिन्दु 'च' पर न होता है और न हो सकता है।

इस सरल गणित से भिन्न चलने वाले लोग, जिनमें बुद्धिमान् विद्वान् जन भी हैं, बिन्दु 'च' (१४ जनवरी) से उत्तरायण मानते हैं। ऐसा मानने में अनेक दोष हैं :

(१) दोनों अयन समान होते हैंय किन्तु यदि ये कखच और चघक हो गये तो असमान हो जायेंगे।

(२) उत्तरायण लघुत्तम दिवस के छोर 'ग' (२७० अंश) से प्रारम्भ न होकर 'च' अर्थात् बीच में से प्रारम्भ हो जाएगा।

(३) 'च' (१४ जनवरी) से न तो दिन बढ़ना प्रारम्भ हो रहा है और न पृथ्वी की दिशा बदलना। अतः उत्तरायण की आकाशीय घटना से इसके सिद्धान्त की अनुरूपता न रहेगी।

शून्य, नब्बे एवं १८० अंश की संक्रान्तियाँ पृथ्वी पर क्रमशः २१ मार्च, २१ जून एवं २३ सितम्बर को निर्विवाद रूप से मानी जा रही हैं। अतः २७० अंश की संक्रान्ति २२ दिसम्बर को ही माननी होगी। अनेक दिनों के अन्तराल से इसे १४ जनवरी को नहीं माना जा सकता।

जो ज्योतिषाचार्य उपर्युक्त से भिन्न किसी अन्य गणना से १४ जनवरी को उत्तरायण का प्रारम्भ एवं संक्रान्ति मानते हैं, उनकी अन्य संक्रान्तियाँ भी दिनांक १४ के आसपास होंगी और किसी भी अवस्था में एक भी संक्रान्ति दिनांक २१ के आसपास नहीं हो सकेगी। दो निकटस्थ संक्रान्तियों में साढ़े तीस दिन का अन्तर अवश्यमेव रहेगा। पूरा विश्व २१ मार्च, २१ जून एवं २३ सितम्बर की संक्रान्तियाँ सर्वसम्मति से मान रहा है। अतः लघुत्तम दिनमान की संक्रान्ति निश्चित रूप से २२ दिसम्बर है और इसी दिन उत्तरायण का प्रारम्भ है।

भारत में प्रचलित शक संवत् सौर पंचांग है, किन्तु भारतीय होकर भी 'शक' नाम के कारण इसके प्रति प्रेम कम है। देश में इससे अधिक विक्रमी संवत् का प्रचलन है, जो चान्द्र पंचांग है अतः इसमें समायोजन करना पड़ता है। इस समय फिलहाल सैद्धान्तिक चर्चा में अंग्रेजी पंचांग का प्रयोग किया गया है। बाद में भारतीय पंचांगों को लेकर विवेचना की जा सकेगी।

गणित-ज्योतिष के अनुसार २२ दिसम्बर को ही मकर संक्रान्ति एवम् उत्तरायण होता है। देश के समस्त पंचांगों में केवल 'श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्' ही इसको सही दर्शाता है। विद्वान् इस पर चिन्तन करेंगे तो सहजता से समझ लेंगे। सामान्य जन के लिए भी उत्तरायण का सिद्धान्त कठिन नहीं है। मध्यकाल में हुई उथल-पुथल के कारण सत्य-असत्य मिश्रित हो गये हैं। अतः आर्यजन का कर्तव्य है कि उत्तरायण के सिद्धान्त को समझें और पर्व को सही दिन २२ दिसम्बर को मनाया करें। सबको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

प्रधान
आर्य समाज श्रृंगारनगर, लखनऊ
मो०: ९८३९१८१६९०

---

पृष्ठ-१ का शेष...

**प्रतिज्ञा की कि ब्रिटिश सरकार से क्रांतिकारियों पर हो रहे अत्याचार का बदला लेकर रहूँगा।**

**गुरु कौन था?**

**फाँसी से पुर्व बिस्मिल जी नित्य जेल में वैदिक हवन करते थे। उनके चेहरे पर प्रसन्नता व संतोष देखकर जेलर ने पूछा की तुम्हारा गुरु कौन है? बिस्मिल जी ने कहा कि जिस दिन उसे फाँसी दी जाएगी, उस दिन वह अपने गुरु का नाम बताएगा, और हुआ भी ऐसा ही। फाँसी देते समय जेलर ने जब अपनी बात याद दिलाई तो बिस्मिल जी ने कहा कि मेरा गुरु है स्वामी दयानन्द।**

**आर्य समाज के कट्टर अनुयायी और पिता से विवाद–**

**स्वामी दयानंद जी की बातों का राम प्रसाद पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि ये आर्य समाज के सिद्धान्तों को पूरी तरह से अनुसरण करने लगे और आर्य समाज के कट्टर अनुयायी बन गये। इन्होंने आर्य समाज द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भाग लेना शुरु कर दिया। इन सम्मेलनों में जो भी सन्यासी महात्मा आते रामप्रसाद उनके प्रवचनों को बड़े ध्यान से सुनकर उन्हें अपनाने की पूरी कोशिश करते।**

**बिस्मिल का परिवार सनातन धर्म में पूर्ण आस्था रखता था और इनके पिता कट्टर पौराणिक थे। उन्हें किसी बाहर वाले व्यक्ति से इनके आर्य समाजी होने का पता चला तो उन्होंने खुद को बड़ा अपमानित महसूस किया। क्योंकि वो रामप्रसाद के आर्य समाजी होने से पूरी तरह से अनजान थे। अतः घर आकर उन्होंने इनसे आर्य समाज छोड़ देने के लिये कहा। लेकिन बिस्मिल ने अपने पिता की बात मानने के स्थान पर उन्हें उल्टे समझाना शुरु कर दिया। अपने पुत्र को इस तरह बहस करते देख वो स्वंय को और अपमानित महसूस करने लगे। उन्होंने क्रोध में भर कर इनसे कहा–**

**"या तो आर्य समाज छोड़ दो या मेरा घर छोड़ दो।"**

**इस पर बिस्मिल ने अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते हुये घर छोड़ने का निश्चय किया और अपने पिता के पैर छूकर उसी समय घर छोड़कर चले गये। इनका शहर में कोई परिचित नहीं था जहाँ ये कुछ समय के लिये रह सके, इसलिये ये जंगल की ओर चले गये। वहीं इन्होंने एक दिन और एक रात व्यतीत की। इन्होंने नदी में नहाकर संध्या की। जब इन्हें भूख लगी तो खेत से हरे चने तोड़कर खा लिये।**

**दूसरी तरफ इनके घर से इस तरह चले जाने पर घर में सभी परेशान हो गये। मुरलीधर को भी गुस्सा शान्त होने पर अपनी गलती का अहसास हुआ और इन्हें खोजने में लग गये। दूसरे दिन शाम के समय जब ये आर्य समाज मंदिर पर स्वामी अखिलानंद जी का प्रवचन सुन रहे थे इनके पिता दो व्यक्तियों के साथ वहाँ गये और इन्हें घर ले आये। तब से उनके पिता ने उनके क्रांतिकारी विचारों का विरोध करना बन्द कर दिया।**

**फाँसी का दिन–**

**१९ दिसंबर को फाँसी वाले दिन प्रातः ३ बजे बिस्मिल जी उठते है। शौच, स्नान आदि नित्य कर्म करके यज्ञ किया। फिर ईश्वर स्तुति करके वन्देमातरम् तथा भारत माता की जय कहते हुए वे फाँसी के तख्ते के निकट गए। तत्पश्चात् उन्होने कहा– "मै ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।" फिर पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी तख्ते पर चढ़े और 'विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि...'वेद मंत्र का जाप करते हुए फंदे से झूल गए।**

**ऐसी शानदार मौत लाखों में दो-चार को ही प्राप्त हो सकती है। स्वातंत्र्य वीर पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी के इस महान बलिदान ने भारत की आजादी की क्रांति को और तेज कर दिया। बाद में चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव जैसे हजारों देशभक्तों ने उनकी लिखी अमर रचना 'सरफरोशी की तमन्ना' गाते हुए अपने बलिदान दिये।**

**पं रामप्रसाद बिस्मिल आदर्श राष्ट्रभक्त तथा क्रांतिकारी साहित्यकार के रूप में हमेशा अमर रहेंगे। दुखद है आज भारत के आधिकांश लोगो ने उन्हें और उनके प्रेरणा स्त्रोत दोनों को भूला दिया है।**

**परन्तु जब तक हमारे जैसे कुछ परवाने हैं उनको कैसे भूलने देंगे। आखिर हम भी तो आर्यसमाज की ही देन है**

# प्रेरक जीवन के धनी-स्वामी श्रद्धानन्द

-डॉ0 महेश वेदालंकार

इस देश को सद्ग्रन्थों और महापुरुषों की लम्बी विरासत व परम्परा मिली। ये प्रेरक सद्ग्रन्थ तथा पुण्य आत्माएँ जीवन जगत की प्रकाश स्तम्भ हैं। ये ही भूली-भटकी मानव जाति को सन्मार्ग दिखाते हैं। इसी बलिदानी परम्परा में स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान और देश, धर्म, संस्कृति के रक्षक उनके कार्यों व आदर्शों को संसार श्रद्धा व सम्मान से स्मरण करता है। वे श्रद्धा, त्याग, सेवा, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थे। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व आकर्षक व सराहनीय था। उनकी तप, त्याग, तपस्या, सेवा, वीरता, दृढ़ता, राष्ट्र प्रेम आदि वन्दनीय है। उनकी गुरुभक्ति स्पृहणीय है। उनके कार्य अनुकरणीय व प्रशंसनीय हैं। उनका बलिदान प्रेरणीय है, उनका जीवन चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनों से मुक्ति प्रेरक व असाधारण है। उनकी देश, धर्म, जाति तथा वैदिक धर्म की सेवा स्लाघनीय है। उनका सर्वस्व समर्पण स्वर्णिम है। उनका संगीनों के सामने सीना खोलकर खड़े हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के पूर्व जीवन का सिंहावलोकन करते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र बनता है जिनमें कई बुराईयाँ, नास्तिकता, खान-पान की अपवित्रता, आचरण की मलीनता और भोग-विलास की प्रधानता थी। वे धर्म, कर्म, ईश्वर विश्वास, स्वाध्याय, सत्संग आदि से दूर रहते थे। घटना क्रम बदला। ऋषिवर देव दयानन्द का चुम्बकीय साक्षात् दर्शन, तर्क ज्ञानयुक्त श्रवण और वार्तालाप से ज्ञान चक्षु खुल गये। जीवन की धारा बदल गई। पूर्व सन्मार्ग के संस्कार जागृत हो उठे। प्रभु कृपा हुई, जीवन का रंग-ढंग ही बदल गया। पतित जीवन से प्रेरक और सन्मार्ग के जीवन की ओर चल पड़े। यह हृदय परिवर्तन से ही सम्भव हुआ। यही प्रभु की कृपा कहलाती है। परमेश्वर जिनका कल्याण चाहता है उनके दुर्गुण, दुर्व्यसन हटाकर भ्रदभाव जागृत कर देता है। आज हमारे जीवनों में अनेक दोष बराईयाँ दर्गण दुर्व्यसन अहंकार ईर्ष्या-द्वेष आदि घर किये बैठे हैं जो हमें खोखला कर रहे हैं। हमारी सबसे बड़ी भूल व गलती है कि हम अपने दोषों, कमियों और गलतियों को देखते, मानते तथा जानते नहीं हैं। अपने को निर्दोष और दूसरों को दोषी मान एवं समझ रहे हैं। व्यक्ति का सुधार, निर्माण, उत्थान व कल्याण तभी होता है जब वह अपने दोषों, बुराईयों को महसूस करता है। मुंशीराम राम ने अपनी कमियों, अवगुणों को महसूस किया। छोड़ने की इच्छाशक्ति और संकल्प किया। वे महामानव श्रद्धानन्द बन गये। सीखने, सम्भलने, सुधरने तथा श्रेष्ठ बनने का मुंशीराम से बढ़कर प्रेरक उदाहरण कहीं न मिलेगा। मुंशीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं? तो हम क्यों नहीं श्रेष्ठ, महान एवं प्रेरक बन सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन हमें बहुत कुछ कह रहा है। बात कहने की नहीं करने की है। 'कल्याण मार्ग का पथिक' उनकी आत्मकथा सभी के लिए पठनीय एवं प्रेरणाप्रद है।

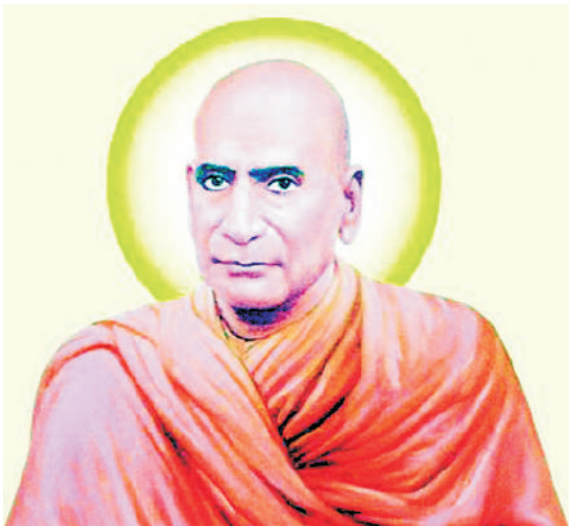

स्वामी श्रद्धानन्द वाक्शूर नहीं है, कर्मशूर थे। जो कहा उसे कर दिखाया। उनके जीवन का कथनी, करनी का पक्ष संसार को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, नास्तिकता से आस्तिकता की ओर, अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर चलने व बढ़ने की शिक्षा एवं प्रेरणा देता रहेगा। ऐसी श्रद्धा, आस्था, विश्वास, व्रती संकल्प, कर्मठ चरित्र इतिहास में दुर्लभ मिलता है।

जो इतनी गिरावट से इतनी ऊँचाई पर चढ़ा हो कि जिसने जीवन की सर्वोच्च पदवी संन्यासी पद पाया हो। जिसने स्वर्णिम इतिहास बनाया हो और इतिहास में लम्बी लकीर खींच दी हो, जिसने घनेघोर जंगल में गुरुकुल का दिया जलाया हो, जिसने शुद्धि आन्दोलन का चक्र चलाया हो और अन्त में शुद्धि मिशन के लिए बलिदानी बन गये जिसने दुर्दात डाकुओं को भी तप, त्याग, साहस, वीरता आदि से अपनी ओर आकर्षित कर लिया हो जो हिंसक जन्तुओं को भी अपने सान्निध्य में बैठाने का साहस रखता हो वह इतिहास पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द जी के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी थे। ऋषिवर ने जो वाणी, लेखनी और आर्य समाज के माध्यम से जो सिद्धान्त, विचार, आदर्श तथा वैदिक चिन्तन दिया, उन्हें इस महापुरुष ने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियात्मक साकार रूप दिया। वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पुनरूद्धारक थे। उनका जीवन कठिनाईयों, संघर्षों, चुनौतियों और विरोधों में निकला। किन्तु उन्होंने कभी हार नहीं मानी। चरैवेति चरैवेति के मूल मन्त्र को कभी नहीं छोड़ा। अपने गुरु का मान बढ़ाया। वैदिक धर्म की ध्वजा को ऊँचा उठाया। गुरुकुल कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मारक है उनके जीवन की सम्पूर्ण पूंजी है। किन्तु आर्य समाज का गौरव वह स्मारक आज ढह रहा है। विकृत और मूल से हट रहा है। हम सब बेखबर हैं।

इतिहास साक्षी है 'भूतो न भावी'। स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे महापुरुष थे जिन्हें जामा मस्जिद से वेद मन्त्र बोलकर हिन्दू-मुस्लिम एकता का संदेश देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए गोरखा सिपाहियों के सामने सीना तानकर खड़े हो जाना और कहना चलाओ मेरे सीने पर गोलियाँ? स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निडर, निर्भीक, देशभक्त साहसी ही कह सकता था। शुद्धि आन्दोलन में प्राणों का खतरा मोल लेने वाले हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। यही शुद्धि चक्र अन्त में उनके बलिदान का कारण बना। स्वामी जी में अपार तप, त्याग, सेवा, साहस, वीरता, बलिदान आदि के भाव कूट-कूट कर भरे थे। उनकी शिक्षा, धर्म, संस्कृति, शुद्धि, राजनीति, वैदिक धर्म प्रचार आदि के क्षेत्र में अनूठे वीर पुरुष के रूप में पहचान थी। उनके बलिदान पर जो श्रद्धांजलियाँ और उद्गार देश-विदेश से आये थे उससे उनके सहज ही व्यक्तित्व एवं कृतित्व का पता चलता है। किसी ने उन्हें राष्ट्र निर्माता, किसी महान स्वतंत्रता सेनानी, किसी ने पथ प्रदर्शक, किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति, किसी ने गुरुकुल शिक्षा का पुनरूद्धारक, किसी ने हिन्दू जाति का चौकीदार, किसी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता का पक्षधर आदि अनेक विशेषणों और विशेषताओं से सम्मानित और स्मरण किया था। उनकी स्मृति और कार्यों को अजर-अमर बनाये रखने के लिए प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आता है। जलसे, जलूस, लंगर, फोटो-माला, स्वागत, नारों आदि में सिमट कर रह जाता है। कहीं वैदिक मिशनरी स्प्रिट रचनात्मक, निर्माणात्मक, प्रभावपूर्ण और लोगों को जोड़ने वाली चेतना नजर नहीं आ रही है। सर्वत्र निराशा, तटस्थता, स्थिरता और किं कर्तृतव्य विमूढ़ता छा रही है जबकि आज के वातावरण व हालात में जीवन जगत को आर्य विचारधारा की अत्यन्त आवश्यकता है। वैदिक धर्म ही संसार को सीधा, सच्चा व सरल मार्ग दिखा सकता है। आर्य समाज की पीड़ा है कि तेजी से संन्यासी, विद्वान, वक्ता, धर्माचार्य, भजनोपदेशक, प्रचारक, समर्पित सेवा भावी कार्यकर्ता, सदस्य आदि घट रहे हैं और जा रहे हैं। नये बन नहीं रहे हैं। इस दिशा में बनाने की भावना व ईमानदारी से योजना कार्यक्रम, संकल्प, प्रकल्प भी नहीं हो रहे हैं। केवल प्रस्ताव, मीटिंगों, वादों, भाषणों आदि से बात नहीं बनेगी। सच्चाई एवं ईमानदारी से आर्य संगठनों, संस्थाओं, गुरुकुलों, समाजों आदि को आत्मशुद्धि, आत्मचिन्तन, चुनाव प्रक्रिया, पदों की आयु और समय सीमा आदि का पुनर्मूल्यांकन करने की तुरन्त जरूरत है। सभी जगह जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा है, जो नहीं होना चाहिए वह हो रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह प्रेरक अनुभव सिद्ध संदेश कह रहा है कि आर्य समाज को सेवकों की जरूरत है नेताओं की नहीं। आज आर्य समाज की दुःखद त्रासदी है कि सभी नेता बनना चाह रहे हैं सेवक कोई नहीं बनना चाहता है। सब ऊपर बैठना चाहते हैं नीचे कोई नहीं रहना व बैठना चाहता है। झगड़े, पद-प्रतिष्ठा पैसे के लिए हो रहे हैं। किसी को दयानन्द, वेद प्रचार, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की बेचौनी, दर्द और झटपटाहट नहीं सता रही है। सब जगह मूल में भूल हो रही है। केवल नारों, जयकारों तथा झण्डों से बात नहीं बनेगी। यदि ऋषि और आर्य समाज को अजर-अमर रखना और आगे बढ़ना है तो नियम, सिद्धान्तों, विचारों व संगठन को अविलम्ब एकता, अनुशासन में लाना तथा झगड़ों विवादों से बचाना होगा। विवादों से बात नहीं संवादों से बात बनेगी। सर्वत्र लम्बे समय से एकाधिकार की भावना, पदों को न छोड़ने का हठ, अहंकार और दुराग्रह आर्य समाज को खोखला, कमजोर व संकुचित कर रहा है।

आर्यों! उठो, जागो अपने स्वरूप को समझो ! श्रद्धानन्द जी का बलिदान हमें पुकार रहा है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए जीवन बलिदान कर दिया। क्या हमें ऋषि मिशन व आर्य समाज की एकता, संगठन व उन्नति के लिए स्वार्थ, अहंकार और पदों को नहीं छोड़ सकते हैं? पदों से कदों को ऊँचा करो। कहाँ व्यर्थ की बातों, ईर्ष्या, द्वेष तथा विवादों में उलझ रहे हैं। ऋषि की आत्मा दुःखी होकर हमें क्या कह रही होगी। क्या हमने इसीलिए आर्य समाज बनाया था, यह बलिदान पर्व हमें बहुत कुछ कह रहा है। आईये! विचारें चिन्तन करें।

(साभार-वैदिक सार्वदेशिक)

# महान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

**–मनमोहन कुमार आर्य**

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के उन्नयन में स्वामी श्रद्धानन्द जी का महान योगदान है। उन्होंने अपना सारा जीवन इस कार्य के लिए समर्पित किया था। वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को उन्होंने अपने जीवन में धारण किया था। देश भक्ति से सराबोर वह विश्व की प्रथम धर्म-संस्कृति के मूल आधार ईश्वरीय ज्ञान ''वेद'' के अद्वितीय प्रचारकों में से एक थे। शिक्षा जगत, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, समाज व जाति सुधार, बिछुड़े हुए धर्म बन्धुओं की शुद्धि, दलितों के प्रति दया से भरा हृदय रखने वाले तथा उनकी रक्षा में तत्पर, आर्यसमाज के महान नेताओं में से एक, आदर्श सद्गृहस्थी, कर्तव्य पालन में अपना सर्वस्व व प्राण समर्पित वाले अद्वितीय महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि जिसे जानकर प्रत्येक सात्विक हृदय वाला व्यक्ति उनका अनुयायी बन जाता है। महर्षि दयानन्द के बाद आर्यसमाज और देश में उनके समान गुणों वाला व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ। प्रसिद्ध आर्य वैदिक संन्यासी स्वामी डा. सत्य प्रकाश सरस्वती ने उनसे सम्बन्धित अपने कुछ संस्मरणों को प्रस्तुत करने के साथ उनके कार्यों पर अपनी राय भी दी है। इसी पर आधारित हमारा यह लेख है।

सन् १९१६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अवसर पर लखनऊ में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने महात्मा मुंशीराम के दर्शन किए थे। १९१४-१५ में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे और जनता में गांधी जी की लोकप्रियता बढ़ रही थी। नरम दल के नेता कांग्रेस से अलग हो गए थे और उन्होंने अपनी आल इण्डिया लिबरल फैडरेशन को संघटित करना आरम्भ कर दिया था। गरम दल के व्यक्तियों के हृदय सम्राट् लोकमान्य तिलक जी थे। ८ अप्रैल, १९१५ को गुरुकुल कांगड़ी में महात्मा मुंशीराम के आश्रम में मिस्टर गांधी आये और ''महात्मा'' गांधी बन करके वहां से निकले। महात्मा मुंशीराम जी ने ही गांधी जी को गुरुकुल में पधारने पर पहली बार उनको 'महात्मा' शब्द से सम्बोधित किया था, यह महात्मा शब्द इसके बाद आजीवन उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यही गांधी जी के महात्मा गांधी बनने का इतिहास है। सन् १९१६ की कांग्रेस में स्वामी सत्यप्रकाश जी ने गांधी जी और मुंशीराम जी दोनों को राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्बन्धी एक कार्यक्रम में देखा था। दोनों की वेशभूषा की रूपरेखा बराबर उनकी आंखों के समाने बनी रही, ऐसा उन्होंने अपने लेख में वर्णित किया है। तब वहां महात्मा मुंशीराम जी भव्य दाढ़ी, सुदृढ़ शरीर और गले के नीचे पीत वस्त्र तथा गांधी जी अपनी काठियावाड़ी पगड़ी, अंगरखा और नंगे पैर उपस्थित थे। इसके बाद स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रयागराज आ गये। वहां 'आर्यकुमार सभा' के उत्सव पर स्वामी श्रद्धानन्द जी आये थे और तब स्वामी सत्यप्रकाश जी ने दूसरीबार उन्हें निकट से देखा। स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रयाग में नयी सड़क के एक दुमंजिले मकान में ठहराया गया था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने यह भी वर्णन किया है कि २६ दिसम्बर १९१९ को अमृतसर कांग्रेस में स्वामी श्रद्धानन्द स्वागताध्यक्ष थे और पं. मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष। किम्वदन्ती है कि दोनों ने एक-दूसरे को पहचाना--दोनों सहपाठी थे बनारस, इलाहाबाद, आगरा या बरेली में से किसी स्थान पर। महात्मा मुंशीराम जी की प्रारम्भिक शिक्षा बरेली में हुई, १८७३ में उच्च शिक्षा क्वीन्स कालेज बनारस में, १८८० और पुनः १८८८ में कानूनी शिक्षा लाहौर में। महात्मा मुंशीराम जी का नाम श्रद्धानन्द संन्यास के बाद पड़ा। संन्यास उन्होंने १२ अप्रैल १९१७ को मायापुर (कनखल) में लिया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी सन् १९१५-१६ में इन्द्र विद्यावाचस्पति और पौराणिकों की बातें सुना करते थे, क्योंकि १९१२-१६ तक सनातन धर्म सभाओं की बड़ी धूम थी--ये सनातन धर्म सभाएं धीरे-धीरे निष्क्रिय हो गयीं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने संस्मरणों में बताया है कि सन् १९२५ ई. में मथुरा में जो महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मनायी गयी थी उसके अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे--तब तक उनका स्वास्थ्य गिर चुका था और महात्मा नारायण स्वामी जी वस्तुतः उस समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष थे। आनन्द भवन में होने वाली कांग्रेस की बैठकों में १९२२ ई. के बाद भी स्वामी जी प्रयागराज कई बार आये। १९२१ ई. के अप्रैल मास में पं. मोतीलाल जी की पुत्री विजयलक्ष्मी के विवाह में भी स्वामी श्रद्धानन्द जी सम्मिलित हुए थे पर मोपला काण्ड (मालाबार, केरल) के बाद श्रद्धानन्द जी कांग्रेस से धीरे-धीरे अलग हो गये। स्वामी दयानन्द ने मृत्यु के समय आर्यसमाज का नेतृत्व किसी व्यक्ति के हाथ में नहीं छोड़ा था। ईश्वर के भरोसे मानों वे चल दिये। १८८३ ई. के बाद स्वयं ही आर्यसमाज में 'व्यक्तियों' का प्रादुर्भाव हुआ। इन व्यक्तियों में श्रद्धानन्द का इतिहास ही आर्यसमाज का इतिहास है। इस युग के अन्य लोगों में महात्मा हंसराज, पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द और स्वामी नित्यानन्द का भी अभूतपूर्व व्यक्तित्व था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने बीसवीं शती के प्रथम पाद में भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आर्यसमाज में स्वामी दयानन्द के बाद श्रद्धानन्द-सा दूसरा व्यक्ति देखने में नहीं आया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की १९२४ ई. में प्रकाशित 'कल्याण-मार्ग का पथिक' आत्मकथा को पढ़ा। उनके पास उनका और गुरुकुल कांगड़ी में श्रद्धानन्द जी के सहयोगी आचार्य रामदेव जी द्वारा सम्पादित 'द आर्यसमाज एण्ड इट्स डिटैक्टर्स-ए विण्डिकेशन' प्रसिद्ध ग्रन्थ था। 'दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तान' उन्होंने नहीं पढ़ी। उर्दू में लिखित यह ग्रन्थ आर्यसमाज के आन्तरिक विग्रह की कष्ट कथा है।इसका अनुवाद हरिद्वार निवासी हिन्दी कवि श्री सुमन्त सिंह आर्य ने किया है जो हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डोन-सिटी से कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुका है। कुछ विद्वान इसमें समाहित आलोचनाओं के कारण इसके प्रकाशन की आवश्यकता नहीं समझते थे। श्रद्धानन्द जी विषयक सबसे अधिक बातें स्वामी सत्यप्रकाश जी को स्वामी श्रद्धानन्द जी पर आस्ट्रेलियाई प्रो. जे.टी.एफ. जार्डन्स की पुस्तक से ज्ञात हुईं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर कई टिप्पणियां की हैं। वह लिखते हैं कि गुरुकुल के अनगिनत स्नातकों के कुलगुरु महात्मा मुंशीराम थे, न कि श्रद्धानन्द। मुंशीराम और श्रद्धानन्द तो दो अलग व्यक्तित्व हैं। मुंशीराम के रूप में वे महात्मा थे, गांधी के अत्यन्त निकट, गुरुकुलीय प्रणाली के उन्नायक, शिक्षा के क्षेत्र में अनन्य प्रयोगी तथा टैगोर की समकक्षता के शिक्षाशास्त्री। दूसरा उनका स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का रहा-सम्प्रदायवादिता मिश्रित राष्ट्रीय-उलझनों में फंसे हुए-कभी मालवीय जी के साथ, कभी हिन्दू महासभा के साथ, कभी उनसे दूर भागते हुए अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, कभी-कभी निर्वाचनों की उलझनों में फंस जाने वाले व्यक्ति। उसका उन्हें पुरस्कार मिला--२३ दिसम्बर, १९२६ ई. को सायंकाल ४ बजे दिल्ली में अब्दुल रशीद की गोलियों से बलिदान। वे सदा के लिए अमर हो गए। अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती खोलकर खड़ा होने वाला वीर राष्ट्रभक्त संन्यासी श्रद्धानन्द का एक यह तेजस्वी रूप था। (महर्षि दयानन्द के बलिदान के बाद ७ मार्च, १८९७ को एक विधर्मी आततायी द्वारा वैदिक धर्म के प्रथम शहीद पण्डित) लेखराम की पंक्ति में खड़ा कर देने वाला ऋषि दयानन्द का असीम भक्त अमर शहीद श्रद्धानन्द।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान पर पर भारत के लौहपुरुष सरदार पटेल ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा, 'स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आंखों के सामने आकर खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में थे। स्वामी श्रद्धानन्द छाती खोलकर सामने आते हैं और कहते हैं, 'लो, चलाओ गोलियां।' उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।' वीर विनायक सावरकर ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि में कहा, 'इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू-जाति पर तथा हिन्दुस्तान की बलि-वेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी। उनका सम्पूर्ण जीवन विशेषकर उनकी शानदार मौत हिन्दू-जाति के लिए एक स्पष्ट सन्देश देती है। हिन्दू-राष्ट्र के प्रति हिन्दुओं का क्या कर्तव्य है--इसे मैं स्वामी जी के अपने शब्दों में ही रखना चाहता हूं। सन् १९२६ के २९ अप्रैल के ''लिबरेटर'' पत्र में वे लिखते हैं ''स्वराज्य तभी सम्भव हो सकता है जब हिन्दू इतने अधिक संगठित और शक्तिशाली हों जाएं कि नौकरशाही तथा मुस्लिम धर्मोन्माद का मुकाबला कर सकें।'' उपर्युक्त उद्धरण से हिन्दू जाति को संगठित करने की तीव्र मांग का पता चल सकता है। और विशेषकर ऐसे नाजुक समय में जबकि इस पर चारों ओर से आघात और आक्रमण हो रहे हों।'

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की और उसे अपने खून से सींचा। आज यह संस्था अपने मूल उद्देश्य व गौरवपूर्ण अतीत से दूर हो चुकी है। दिनांक २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का ९८ वां बलिदान दिवस है। अतः इस अवसर पर उनके पावन जीवन चरित्र का अध्ययन कर अपने जीवन को पुण्यकारी बनाया जा सकता है। धर्म की वेदी पर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र व उनके ग्रन्थों का अध्ययन कर उनके जैसा व उनकी अपेक्षाओं के अनुरुप बनकर ही उन्हें श्रद्धांजलि दी जा सकती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रायः सभी ग्रन्थों को 'श्रद्धानन्द ग्रन्थावली' के नाम से लगभग ३६ वर्ष पूर्व ११ खण्डों में प्रकाशित किया गया था। इसका नया भव्य एवं आकर्षक संस्करण 'मैसर्स विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली' से दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है। हम पाठकों को इसे पढ़ने का आग्रह करते हैं। आईये, स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन व कार्यों को जानकर उनसे प्रेरणा ग्रहण करें और वैदिक धर्म व संस्कृति की सेवा कर अपने जीवन को सफल करें। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस २३ दिसम्बर पर उन्हें श्रद्धांजलि।

●●●

# श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यस्मृति में

-पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धया कृतयज्ञेन श्रद्धानन्दो भवेश्वरः।।

यों तो आर्यसमाज किसी समय भी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को भुला नहीं सकता, परन्तु १९४६ ई का दिसम्बर मास विशेष रूप से स्वामी जी की याद दिलाता है। पूर्वी बंगाल की विपत्ति, नोआखाली का हत्याकाण्ड आदि कई घटनाएँ हैं जो रह-रहकर स्वामी जी की याद दिलाती हैं। स्वामी जी महाराज का जीवन इस समय हमको कितना सहारा देता इसका अनुमान लगाना कठिन है। परन्तु महापुरुषों की स्मृति का एकमात्र उपयोग यह है कि हम अपने जीवन को उस स्मृति से प्रभावित करें-

Lives of great men all remind us, We can make our lives sublime, And departing, leave behind us, Footprints on the sands of time, Footprints that perhaps another, Sailing or lifes solemn main. A forlorn and ship & wrecked brother, Seeing, shall take, heart again-
(Longfellow)

संस्कृतानुवाद-

१. नः स्मारयन्ति त्विह जीवनानि शुभानि सर्वाणि महाजनानाम्।
स्वजीवनं साधयितुं समर्था वयं तथा स्मश्च यथा त आसन्।।
२. अस्मासु मृत्योश्च मुखं गतेषु त्यजेम चिह्नानि पदाङ्कितानि।
आगन्तुकानां सुसहायतार्थं रेणौ तटे कालमहोदधेश्च।।
३. इमानि चिह्नानि विलोक्य येन गंभीरसंसार समुद्र यात्री।
दुर्भाग्य वीच्याहत भग्नपोतः समुत्सहेतैक हताशबन्धुः।।

भावार्थ यह है कि महापुरुषों के जीवन हमें इस बात का स्मरण कराते हैं कि हम भी अपने जीवनों को उन्नत कर सकते हैं और इस संसार से प्रयाण करते हुए ऐसे चिह्न कालरूपी समुद्र की रेत पर छोड़कर जा सकते हैं जिनको देखकर निराश व्यक्तियों के अन्दर भी आशा का संचार हो जाए।

आर्य जाति इस समय संकट में है। इसका जहाज टूटा पड़ा है। चारों ओर से समुद्र में तूफान उठ रहा है। ऐसे समय स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्यस्मृति से ही हम अपनी उन्नति के पथ पर चलने में सहायता ले सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्यसमाज के लिए क्या किया? यह प्रश्न नहीं। प्रश्न तो यह है कि उन्होंने क्या नहीं किया? संगठन, साहित्य और संस्था तीनों विभागों में उनकी बुद्धि और उनके परिश्रम के चमत्कार दिखाई पड़ते हैं। परन्तु इस समय हम एक ही बात की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करेंगे।

मैं इस समय 'बलिदान भवन' में बैठा हुआ हूँ और बलिदान की बात ही सोच रहा हूँ। सार्वदेशिक सभा के जन्म में पूज्य स्वामी जी का विशेष हाथ था और इसकी उन्नति में वे सदा यत्न करते रहे। यहीं इनका प्राणान्त हुआ। अतः सार्वदेशिक सभा पर उनकी अन्तिम छाप है।

जब सार्वदेशिक सभा खोली गई थी उस समय आर्यसमाजों को और विशेषकर शक्तिशाली आर्यसमाजों को इसकी कुछ अधिक परवाह नहीं थी। हरएक समाज समझता था कि काम तो चल ही रहा है। परन्तु दूरदर्शी लोग जानते थे कि जिस समाज में संगठन नहीं वह चाहे कितना प्रबल क्यों न हो, तूफान के झोंकों को सहन नहीं कर सकता। समाज का ज्यों-ज्यों काम बढ़ा, उसकी कठिनाइयाँ भी बढ़ीं और आवश्यकता प्रतीत हुई कि समस्त आर्यसमाज जगत् को मिलकर काम करने चाहिएँ। हमारी सब शक्तियाँ केन्द्रीभूत होनी चाहिएँ। हैदराबाद (दक्षिण) के सत्याग्रह ने दोपहर के सूर्य के समान स्पष्ट कर दिया कि केन्द्रीय शक्ति में कितना प्रभाव है। उस समय यदि सार्वदेशिक सभा न होती तो हमको कभी सफलता प्राप्त न हो सकती। सिन्ध और सत्यार्थप्रकाश-आन्दोलन के सम्बन्ध में भी यही बात ठीक जंचती है। इसलिए आवश्यकता है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यस्मृति को ऐसे प्रकार से मनावें कि समस्त आर्यजगत् की सामूहिक शक्ति एक स्थान पर केन्द्रित हो सके।

सार्वदेशिक सभा के क्षेत्र बहुत विस्तृत हैं। इसको इस भूमण्डल पर कार्य करना है जिसकी परिधि २५००० मील और जिसका व्यास ८००० मील से ऊपर है। आर्यसमाज के क्षेत्र में न केवल सूर्यास्त नहीं होता अपितु सदा मध्याह्न रहता है। इतनी विशाल संस्था की शक्ति और समर्थता कितनी विशाल होनी चाहिए।

इसमें सन्देह नहीं कि सार्वदेशिक सभा की लोकप्रियता बढ़ रही है। अभी हमने नोआखाली के लिए अपील की है और प्रायः सभी आर्यसमाज और आर्य भाई अपनी शक्ति के अनुसार धन भेज रहे हैं। उन्हीं के सहारे सभा ने पूर्वी बंगाल में अपने सहायता के क्षेत्र खोले हैं और आर्य जनता को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि उनके काम को लोग प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे हैं।

परन्तु हमको केवल विपत्ति के समय ही तो काम नहीं करना। हमारा अधिक उपयोगी तो शान्ति के समय होना चाहिए। बाह्य आक्रमणों से बचाने के अतिरिक्त हमारा मुख्य काम यह आन्तरिक शक्ति बढ़े और हमारे काम में नैरन्तर्य हो। मैं देखता हूँ कि इसमें बहुत बड़ी कमी है। सभा के साधन बहुत ही संकुचित हैं। मैं यहाँ दो-एक बातें लिखता हूँ-

(१) आजकल बिना एक अखबार के अपनी आवाज जनता तक नहीं पहुँचाई जा सकती। कांग्रेस को ओर देखो! इसके कितने पत्र हैं जो कांग्रेस की नीति को प्रतिदिन प्रातःकाल संसारभर में फैला देते हैं। क्या आर्यसमाज का कोई एक भी ऐसा पत्र है? यह ठीक है कि पत्र निकालने में पैसा लगता है, परन्तु पत्र के बिना काम कितना अधूरा रहता है! हमको दूसरों के मुखों से बोलना पड़ता है और वे नहीं चाहते कि वे हमारी आज्ञा पर अपना मुँह खोला करें। उनको क्या गरज पड़ी? हम गूँगे हैं। हमारा गूँगापन दूर होना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के पास एक बढ़िया प्रेस और एक श्रेष्ठ अखबार होना चाहिए। केवल भारतवर्ष में ही ५० लाख आर्य और २००० से अधिक आर्यसमाजें हैं। यदि ५० लाख के चौथाई के अर्थात् १२ लाख आर्य चार-चार आने इस काम को देवें तो प्रेस और पत्र दोनों चल सकते हैं।

(२) सभा के पास एक अच्छा प्रकाशन विभाग होना चाहिए जिसमें सब प्रसिद्ध भाषाओं का साहित्य होना चाहिए। इसको व्यापारिक ढंग पर चलाया जाय जिससे प्रचार में कठिनाई न हो। एक लाख की पूँजी से यह काम आरम्भ किया जा सकता है। परन्तु इसके लिए एक ऐसे अनुभवी सज्जन की आवश्यकता होगी जिसको व्यापार और साहित्य दोनों से प्रेम हो। आर्यसमाज में साहित्यकारों का अभाव नहीं है। अभाव है उन साधनों का जिनसे साहित्य में वृद्धि हो सकती है।

(३) तीसरी चीज है संगठन। आर्यसमाजियों को पाश्चात्य लड़ाई-झगड़ों को देखकर यह विश्वास हो गया है कि लड़ाई-झगड़े उन्नति के चिह्न और उन्नति के साधन हैं। अतः हममें से जो शक्तिशाली हैं वे संगठन को ढीला करने में अपनी शान समझते हैं। इससे जन, धन और शक्ति तीनों का ह्रास होता है। परन्तु कठिनाई यह है कि यह तीसरी बात किससे कही जाए? जो मानने को तैयार हैं वे लड़ते नहीं और जो लड़ते हैं उनको हमारी बात सुनने का अवसर या अवकाश नहीं। फिर भी कुछ तो करना ही होगा।

यह तो मानना ही होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी अब आकर हमारी विपत्तियों को दूर नहीं कर सकते। अब वे हमारे मध्य में नहीं हैं। अब तो हमको केवल उनकी स्मृति से ही शिक्षा ग्रहण करनी है। स्मृति मनाने का यह अर्थ तो है नहीं कि हम हाय-हाय करें और ताजियों की तरह अपनी छाती पीटें। हमारा कर्तव्य तो यह है कि जो काम श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को बहुत प्रिय था उसको बढ़ाने का यत्न करें। ●●●

# मुस्लिम युवक ने अपनाया सनातन धर्म

## नाम भी बदला, बोला-'आज दूसरा जन्म हुआ है'

उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में एक मुस्लिम युवक ने स्वेच्छा से सनातन वैदिक धर्म अपना लिया। युवक ने अपना नाम फखरुद्दीन से बदलकर फतेह बहादुर सिंह रख लिया। मुस्लिम युवक के हिंदू धर्म अपनाने का कारण सुन सभी आवाक हैं, आश्चर्यचकित हैं।

यूपी के सीतापुर में १६.१२.२०२४ को एक मुस्लिम युवक ने शुद्धि यज्ञ के साथ सनातन धर्म अपना लिया. मुस्लिम युवक फखरुद्दीन ने सनातन धर्म अपनाते हुए अपना नाम फतेह बहादुर सिंह रख लिया. फतेह बहादुर सिंह उर्फ फखरुद्दीन सीतापुर के अटरिया थाना क्षेत्र का रहने वाला है. वह बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार से आहत था। कानूनी प्रक्रिया अपनाकर वैदिक रीति से शुद्धि संपन्न हुई। फखरुद्दीन ने सबसे पहले अपने बाल बनवाए. उसके बाद दाढ़ी कटवाई. फिर नहा धोकर मंदिर में हवन किया ।

फतेह बहादुर सिंह उर्फ फखरुद्दीन खान ने बताया, 'मैं पहले से ही गौसेवक हूं और कई पीढ़ी पहले हमारे पूर्वज हिंदू क्षत्रिय थे. किसी कारण धर्म परिवर्तन कर लिया था किंतु जिस तरह से बंगलादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार से मन आहत है'

उसने आगे कहा, 'अभी मैने घर वापसी की है लेकिन अब मैं उन लोगों को भी घर वापसी करना चाहता हूं जिन लोगों को आक्रांताओं ने तलवार के डर से इस्लाम धर्म अपनाने को विवश किया है ' ।

(वर्तमान में शुद्धि ही आपकी आने वाली पुश्तों की रक्षा करने में सक्षम हैं। याद रखें आपके धार्मिक अधिकार तभी तक सुरक्षित हैं, जब तक आप बहुसंख्यक हैं। इसलिए अपने भविष्य की रक्षा के लिए शुद्धि कार्य को तन, मन, धन से सहयोग कीजिए।)

# शोक समाचार

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी के कोषाध्यक्ष श्री जय प्रकाश आर्य जी का असामायिक निधन दिनांक १६ दिसम्बर, २०२४ को हो गया। उनकी अन्त्येष्टि क्रिया दिनांक २० दिसम्बर, २०२४ को मणिकर्णिका घाट वाराणसी में पूर्ण वैदिक रीति से की गयी।

स्व. जयप्रकाश आर्य की स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक २२ दिसम्बर, २०२४ को निज निवास लल्लापुरा वाराणसी में आयोजित की गई। जिसमें आर्यजनों, परिजनों व ईष्टमित्रों आदि ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने स्व. जयप्रकाश आर्य को आर्य समाज के प्रति समर्पित ऋषि भक्त बताया। उनके निधन से आई रिक्तता की भरपाई होना असम्भव है। सभा के समस्त पदाधिकारीजन अपनी शोक संवेदनायें व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिजनों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

## आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपनी समाजों के चित्र एवं दशांश शुल्क आदि यथाशीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में अवश्य जमा कर दें, यद्यपि प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को चित्र प्रेषित किये जा चुके हैं, परन्तु प्राप्त न होने की स्थिति में सभा कार्यालय के दूरभाष नम्बर-०५२२-२२८६३२८ पर सूचित करने का कष्ट करें ताकि चित्र पुनः भेजे जा सकें।

मंत्री
**पंकज जायसवाल**
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
लखनऊ

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र १६ एवं २६ दिसम्बर, २०२४ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

# आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

## महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जयंती स्मृति डाक टिकट लोकार्पण

### आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों का लोगो (प्रतीक चिन्ह) तथा कार्यक्रमों का शुभारंभ

### भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम योद्धा थे महर्षि दयानंद सरस्वती-राज नाथ सिंह

### महर्षि के राष्ट्रवादी चिंतन और विचारों से प्रभावित थे विश्व के महापुरुष-आचार्य देवव्रत

### समाज और राष्ट्र की समस्याओं का समाधान करता है-आर्य समाज का मूल मंत्र- सुरेन्द्र कुमार आर्य

राष्ट्र और मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज निरंतर अपने लक्ष्य और उद्देश्य को प्राप्त करते हुए नए युग की ओर बढ़ रहा है। १९वीं सदी के महामानव महर्षि दयानंद सरस्वती का २००वां जयंती वर्ष और आर्य समाज का १५०वां स्थापना वर्ष देश और दुनिया में एक नई जागृति का संदेश लेकर आया है। १५ दिसंबर २०२४ को भारत मंडपम प्रगति मैदान, नई दिल्ली के भव्य भवन में महर्षि दयानंद सरस्वती जी की २००वीं जयंती के अवसर पर डाक विभाग, भारत सरकार द्वारा डाक टिकट और आर्य समाज के १५०वें वर्ष के लोगो-चिन्ह का लोकार्पण करके आगामी वर्ष के अयोजनों का शुभारंभ भारत के यशस्वी रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने अपने करकमलों से किया। इस अवसर पर गुजरात के माननीय राज्यपाल, आचार्य देवव्रत जी, ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति एवं जेबीएम ग्रुप के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, दिल्ली बीजेपी के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, आर्य वीर दल के प्रधान संचालक, स्वामी देवव्रत जी, श्री प्रकाश आर्य जी, पूर्व राज्यपाल, बाबू श्री गंगा प्रसाद जी, आर्य युवक सभा के अध्यक्ष श्री योगी सूरी जी, डाक विभाग के अधिकारी श्री अखिलेश कुमार पांडेय जी, श्री सुरेंद्र रैली जी, श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्री राकेश ग्रोवर जी, श्री योगेश आत्रेय जी और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी, विभिन्न प्रांतीय सभाओं के अधिकारी, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली के समस्त वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी और अनेक आर्य नर-नारी उपस्थित थे।

दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। आर्य विद्यालयों-गुरुकुलों के विद्यार्थियों ने प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन और आर्य समाज के सेवा कार्यों तथा २००वीं जयंती के दो वर्षीय सफल आयोजनों की वीडियो देखकर उपस्थित आर्यजनों का समूह एवं अतिथि महानुभाव अभिभूत हो गए। इस अवसर पर सभा प्रधान, श्री धर्मपाल आर्य, भाजपा नेता श्री योगेश आत्रेय जी, भाजपा दि.प्र. अध्यक्ष, श्री बीरेन्द्र सचदेवा जी, श्री प्रकाश आर्य जी, गुजरात के राज्यपाल श्री देवव्रत आर्य जी, जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी और मुख्य अतिथि, श्री राजनाथ सिंह जी, रक्षामंत्री, भारत सरकार ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नमन करते हुए विशेष उद्बोधन दिए, श्री राजनाथ सिंह ने अपने विशेष उद्बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए अपने संदेश में कहा कि आज भारत की आजादी का अमृतकाल चल रहा है। यह संयोग है कि आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती की २००वीं जयंती वर्ष मनाया जा रहा है। जिस तरह स्वामीजी ने एक जागरुक सांस्कृतिक भारत की कल्पना की थी, उसी तरह हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत के निर्माण का लक्ष्य रखा है। हमारा मानना है इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमें सांस्कृतिक जागरुकता का माहौल बनाने की जरूरत है। गुजरात की धरती पर जब स्वामीजी का जन्म हुआ था तब देश अंग्रेजों की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजी शासक भारत और भारतीय संस्कृति को दोयम दर्जे का बताकर उसका सार्वजनिक रूप से उपहास उड़ाते थे। स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारत की सोई हुई चेतना को जगाने का काम किया। उन्होंने कहा कि उनका प्रभाव अंग्रेजी शासन से लड़ने वाले लाला लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल, स्वामी श्रद्धानंद जैसे कई महापुरुषों पर पड़ा। स्वातंत्रय वीर सावरकर ने उनकी भूमिका और योगदान के बारे में लिखा है कि स्वामी जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले योद्धा थे। उन्होंने ही सबसे पहले स्वराज की मांग की थी।

इस कार्यक्रम में आर्य समाज की ओर से तीन प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुएः-

१. भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित वक्फ बोर्ड बिल का स्वागत और समर्थन करता है आर्य समाज।

२. बांग्लादेश में अल्पसंख्यक, हिंदुओं पर अत्याचार के घटनाक्रम की निंदा और भारत सरकार से कठोर कदम उठाने की मांग करता है आर्य समाज।

३. भारत में जातिगत जनगणना की मांग वैदिक सिद्धांतों के विरुद्ध है, इसका पुरजोर विरोध करता है आर्य समाज।

महर्षि के अमर वाक्य ऐतिहासिक पुस्तक का विमोचन किया गया और प्रेम सौहार्द के वातावरण में शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

## आर्य समाज रसौली, बाराबंकी का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न

### मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज रसौली, जिला-बाराबंकी का ८९वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १८ से २० दिसम्बर, २०२४ को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

समारोह के समापन रात्रिकालीन सत्र दिनांक २० दिसम्बर, २०२४ को मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा शामिल हुए। प्रधान जी का स्वागत श्री राम कुमार श्रीवास्तव पूर्व प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बाराबंकी, श्री अशोक कुमार अग्रवाल, श्री वीरेन्द्र कुमार, श्री शांति स्वरूप आर्य, श्री ओंकार नाथ मौर्य, श्री रमापति अवस्थी, श्री अर्जुन यादव, श्री विजय कुमार गुप्ता, श्री राजीव कुमार अवस्थी आदि ने माल्यार्पण एवं स्मृति चिन्ह देकर किया। सभा प्रधान जी ने अपने संदेश में वर्तमान समय में बढ़ते मत पंथीय कट्टरवाद को देखते हुए आर्यजनों को संगठित होकर मुकाबला करने को कहा।

कार्यक्रम को आचार्य राम प्रसाद जी, अकबरपुर, पं० राजेश आर्य-मैनपुरी, पं० राम मगन आर्य-सुल्तानपुर, पं० निष्ठाविद्यालंकार, लखनऊ आदि ने भी प्रवचनों एवं भजनों के द्वारा सम्बोधित किया। बालक सुशांत आर्य एवं बालिका हर्षाली आर्या ने भी अपने भजनों से उपस्थित जन समूह को मधुर स्वर से ओतप्रोत कर दिया। संचालन आचार्य सत्यप्रकाश आर्य ने किया।

## अत्यन्त भव्यता के साथ मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस

**स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ द्वारा आयोजित दिनांक २३ दिसम्बर, २०२४ को शिवा जी पार्क (निकट-कैप्टन मनोज पाण्डेय चौराहा), गोमती नगर, लखनऊ में सर्वप्रथम यज्ञ सम्पन्न हुआ, यज्ञ का ब्रहमत्व डा० पीयूष आर्य आजमगढ़ ने किया। उसके उपरान्त भजन व उपदेश का कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में बरेली से समागत जितेन्द्र देव ने अपने भजनों के माध्यम से वीर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। "गोलियाँ सीने पर खाकर चल दिया, कर गये प्राणों का बलिदान श्रद्धानन्द स्वामी" भजन भी प्रस्तुत किया।**

**कार्यक्रम में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वेदाचार्य डा० निष्ठा विद्यालंकार ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय में एक आग थी, वह दाहक नहीं वह पावक थी। भारत भूमि ने अनेक महापुरूषों को जन्म दिया, जिन्होंने समय आने पर अपने अप्रतिम कार्यों से अपनी छाप छोड़ी, उन्हीं में स्वामी श्रद्धानन्द का सन्देश युगों-युगों तक अमर रहेगा।**

**कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने की। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द युवकों के जीवन को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश पथ का मार्ग प्रशस्त किया, वे गुरूकुल परम्परा के सूत्रधार थे।**

**अन्त में ग्रेटर नोयडा विश्वविद्यालय के प्रवक्ता आचार्य डा० विकास पवार ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को मुलाया नहीं जा सकता है। उनका त्याग व बलिदान, शुद्धि का कार्य, कांग्रेस महासम्मेलन की अध्यक्षता निर्भीकता पूर्वक जामा मस्जिद पर वेदमन्त्र बोलना अविस्मरणीय है। स्वामी श्रद्धानन्द को शत्-शत् नमन।**

**कार्यक्रम में मुख्य रूप से वेदामृतानन्द, आचार्य सत्यकाम, वैदिक प्रवक्ता आचार्य विमल किशोर, सुश्री सुमन पाण्डेय, कान्ति कुमार, मनमोहन तिवारी, रण सिंह, दिनेश वाघवा, आर.डी. वर्मा, मनीष आर्य व अजय श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।**

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।